Demand to solve the Problems being faced by Fishermen of Tamil Nadu

SHRI E.M. SUDARSANANAT CHIAPPAN (Tamil Nadu): Mr. Chairman Sir, I want to talk about the problem faced by Tamil Nadu fishermen. Sri Lankan Navy arrested Tamil Nadu fishermen along with mechanished boats and country *vallam*. They were later released. But the boats were not given to them. About 33 boats are on the shores of Sri Lanka. When they delay in returing to the fishermen, they become useless. Hence, Government of India should take immediate steps to get back the boats belonging to Rameshwaram fishermen. Further, Permanent steps should be taken to avoid recurring occurrence in Kachchatheevu islands. Thank you.

SHRI G.K. VASAN (Tamil Nadu): Sir, I associate myself with the Special Mention made by Shri E.M. Sudarsana Natchiappan.

SHRI R. SARATH KUMAR (Tamil Nadu): Sir, I also associate myself with the Special Mention made by Shri E.M. Sudarsana Natchiappan.

PANEL OF VICE-CHAIRMAN

MR. CHAIRMAN: I have to inform the Members that I have nominated the following Members on the Panel of Vice-Chairman:

- 1. Shri Santosh Bagrodia (Rajasthan)
- 2. Shrimati Sarla Maheshwari (West Bengal)
- 3. Shri Balawant alias Bal Apte (Maharashtra) and
- 4. Shri Dinesh Trivedi (West Bengal)

सदन के माननीय सदस्यों की यह इच्छा है कि आज का कार्यक्रम, रेल बजट पर डिस्कशन 2.00 बजे बाद में लिया जाए, इसलिए सदन की कार्रवाई 2.00 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है।

The House then adjourned for lunch at twenty-five minutes past twelve of the clock

The House re-assembled after lunch at one minute past two of the clock, MR. CHAIRMAN in the Chair.

THE BUDGET (RAILWAYS), 2004-05

MR. CHAIRMAN: Now, let us take up the general discussion on the Railway Budget for 2004-05. Shri Balbir K. Punj.

SHRI BALBIR K. PUNJ (Uttar Pradesh): Respected Chairman, Sir, I am grateful to you for providing me an opportunity to speak on the Railway Budget, 2004-05.

Sir, I saw the presentation of the Railway Budget yesterday, heard every word which Shri Lalu Prasadji spoke for over one-hour-and-fifty minutes with rapt attention on television. The Members of the Rajya Sabha are normally entitled to go to the Rajya Sabha Gallery in Lok Sabha and watch the proceedings. But yesterday was a special day, in the sense, that the Treasury Benches were there and the Opposition was absent. There is a reason behind this. Shri Lalu Prasadji, the hon. Railway Minister—I have a lot of affection and respect for him-is a very jovial person and a person who is very close to the land and the people he represents. But, at the same time, we also know that he was Chief Minister of Bihar and he had to resign under very unfortunate circumstances. He was involved in serious cases of corruption and, with the result, there was a CBI inquiry and he was also...(Interruptions)...

SHRI MANOJ BHATTACHARYA (West Bengal): Sir, what is he speaking? ...(Interruptions)...

प्रो. राम देव भंडारी (बिहार) : सर, इसका डिस्कशन से कोई मतलब नही है। ...(व्यवधान)...इसको कार्रवाई से निकाला जाना चाहिए।...(व्यवधान)...

श्री मंगनी लाल मंडल (बिहार): इसको कार्रवाई से निकाल दिया जाना चाहिए। ...(व्यवधान)...

डा. कुमकुम राय (बिहार) : कोई जरूरत नहीं है । ...(व्यवधान)... कल आपके जार्ज फर्नान्डीज साहब ...(व्यवधान)...

श्री सभापति : पूंज जी, आप रेलवे बजट पर आइए।...(व्यवधान)...

डा. कुमकुम राय : जार्ज फर्नान्डीज साहब ...(व्यवधान)...

श्री मंगनी लाल मंडल : आपको रेल बजट पर चर्चा करनी है या आपको लालू जी पर चर्चा करनी है।...(व्यवधान)...

श्री सभापति : आप बजट पर आइए । ...(व्यवधान)...

श्री मंगनी लाल मंडल : केवल रेल बजट पर चर्चा कीजिए।...(व्यवधान)...

डा. कुमकुम रायः जार्ज फर्नान्डीज साहब तेलगी के साथ बैठे हुए थे कल । ...(**व्यवधान**)... श्री सभापति : आप बैठ जाइए । ...(व्यवधान)... पुजं जी, आज बजट पर आइए । ...(व्यवधान)...जाने दे इसको कि कौन कहां था । आप लोग बैठ जाइए ।

पुंज जी, बोलिए, शुरू करिए, लेकिन आप बजट पर आइए।

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE (West Bengal): Sir, let him speak on the Railway Budget ...(Interruptions)...

श्री मंगनी लाल मंडल : सर, उसको कारवाई से निकाल दिया गया।

श्री सभापति : निकालूंगा तो किन-किन को निकालूंगा, आप भी क्या-क्या बोल गए।

SHRI BALBIR K. PUNJ: Sir, I can understand the sentiments of my friends on the other side. After all, they have to show their loyalty to Laluji. And, I would not have touched this subject had Laluji confined himself to the railway matters yesterday in his speech. Those of us who heard him speak they saw that he repeatedly derailed from the Railway Budget so many times and when he derailed, he tired to make fun of the Opposition which was not present. He swore his loyalty to Smt. Sonia Gandhi, which was not a part of the Railway Budget. And if I mention ...(Interruptions)... If I mention the circumstances as to why we were absent, why we boycotted the Railway Budget yesterday, ...(Interruptions)...

श्री सभापतिः इसमें आपत्ति क्या है आपको ? इसमे आपको क्यों चिढ़ हो रही है है...(व्यवधान)...

एक माननीय सदस्यः बजट का बहिष्कार किया गया ...(व्यवधान)...

श्री सभापति : वह तो कह रहे हैं कि सोनिया जी के प्रति लायॅल्टी दिखाई तो आपको ऐतराज़ क्यों हो रहा है...(व्यवधान)...

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: He is referring to the Lok Sabha proceedings here. ...(Interruptions)... Just a minute. ... (Interruptions) Sir, can he refer to the Lok Sabha proceedings in this House? ...(Interruptions)

MR. CHAIRMAN: No. ...(Interruptions)...

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: He is referring to the Lok Sabha proceedings. ...(Interruptions)...

MR. CHAIRMAN: I will take note of it. ...(Interruptions)...

SHRI(BALBIR K. PUNJ: Mr. Chairman, Sir, if it is all right to mention Mrs. Sonia Gandhi's name fifty times while presenting the Railway Budget,

then, while speaking on the Railway Budget, I can also surely mention that name a couple of times. ...(Interruptions)...

श्री सभापतिः आप बजट पर बात शुरू करिए ...(व्यवधान)...

डा. **कुमकुम राय**: हम किस पर चर्चा कर रहे हैं ? क्या सोनिया जी पर चर्चा हो रही है...(**व्यवधान**)...

प्रो.राम देव भंडारी : सभापति महोदय, इनको विषय पर बोलने के लिए कहा जाए...(व्यवधान)...

श्री सभापति : आप बैठ जाओ ...(व्यवधान)...

प्रो. राम देव भंडारी : ये पढ़े-लिखे विद्वान है, इनको विषय पर बोलना चाहिए...(व्यवधान)...

MR. CHAIRMAN: I agree with you. ...(Interruptions)... I agree with you. ...(Interruptions)... बैठ जाइए...(व्यवधान)...

SHRIDIPANKAR MUKHERJEE: Sir, I request you to please see the Lok Sabha proceedings that he is referring to. ...(Interruptions)...

SHRI BALBIR K. PUNJ: In fact, Mr. Chairman, Sir, I am not mentioning any names just like that. While I am speaking on the Railway Budget, I also have to mention the names and the things which the hon. Railway Minister had very frequently mentioned in his speech yesterday... (Interruptions).... If my friends had to object, they should have objected yesterday....(Interruptions)...

SHRI SANTOSH BAGRODIA (Rajasthan): Sir, I want your ruling.... {Interruptions}.... Can he mention names?(Interruptions).... Let us know it; otherwise, everybody will start mentioning all the names of Members of the other House. ...(Interruptions).... Please, Sir, we want your ruling.

MR. CHAIRMAN: There is no need for any ruling. ...(Interruptions)... छोड़िए,छोड़िए...(व्यवधान)...

SHRI BALBIR K. PUNJ: Mr. Chairman, Sir, anything which was mentioned and which was referred to by the Railway Minister yesterday in his speech, I have the full right to comment on that, I intend to come back to it later. ...(Interruptions)...

श्री सभापति : मेरी बात सुन लीजिए। पुंज साहब उन्होनें बजट स्पीच की कॉपी सदन के पटल पर रखी है, आप उस आधार पर बोलिए...(व्यवधान)...

SHRI BALBIR K. PUNJ: You get the record. ...(Interruptions)... You get the record and see what the Railway Minister had to say about the Congress President and what he had to say about the Opposition. ...(Interruptions):..

श्री संतोष बागड़ोदिया : इनसे नाम विदड़ा करवाइए ...(व्यवधान)...

श्री सभापति : पुंज साहब बोलिए।

श्री बलबीर के.पुंज: मैं भी रेल बजट पर बात कर रहा हूं पर जब रेल मंत्री कल रेल बजट प्रैजेंट कर रहे थे तो उसमें सोनिया जी का स्तुतिगान भी कर रहे थे। ...(व्यवधान)...

कार्मिक लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री श्री सुरेश पचौरी: सभापित महोदय, मेरा आपसे विनम्र अनुरोध है कि ...(व्यवधान)...

SHRI BALBIR K. PUNJ: Sir, I am not yielding. ...(Interruptions)...

SHRI SURESH PACHOURI: Sir, with your permission. ...(Interruptions)...

MR. CHAIRMAN: There is a point of order.

श्री सुरेश पचौरी: आदरणीय सभापित महोदय, मेरा आपसे विनम्र अनुरोध है कि इस सदन की यह पंरपरा नहीं है कि यहां के माननीय सदस्य, दूसरे सदन के माननीय सदस्यों के बारे में इस प्रकार का कोई उल्लेख नहीं कर सकते, जिस ढंग से इन्होंने व्यंग्यात्मक उल्लेख किया है। मैं आपसे अनुरोध करना चाहुंगा कि इसे सदन की कार्यवाही से विलोपित करें और माननीय सदस्य को कृपापूर्वक निर्देशित करें कि वह विषय के संबंध में ही बात करें तो ज्यादा उचित होगा।

SHRI BALBIR K. PUNJ. Mr. Chairman, Sir, I am only referring to the speech which the hon. Railway Minister had made while presenting the Railway Budget yesterday.

श्री सुरश पचौरी: सभापति महोदय, यह सदन की परंपरा रही है और इस प्रकार के डॉयरेक्शंस पीठासीन अधिकारियों ने दिए है ...(व्यवधान)...

श्री सभापति : ज्यादा अच्छा होगा कि आप पहले रेल बजट पर चर्चा करें और बीच में यदि कोई रेफरेंस आता हो जो आपत्तिजनक न हो, उसे आप कहें। श्री एस.एस.अहलुवालिया (झारखंड): महोदय, आपतिजनक की बात नहीं ।सदन के सामने एक बहस है और ये जो पंरपराएं बनी थी, तब यह लाइव टेलीकास्ट नहीं होता था, पूरी दुनिया के लोग नहीं देखते थे। पूरे भारत ने, पूरी दुनिया ने इस भाषण को देखा है, सुना है...(व्यवधान)...

श्री सुरेश पचौरी: तो इसका मतलब यह है कि इस सदन की जो परंपरा रही है, उसको आप तोड़ना चाहते है...(व्यवधान)...

श्री एस.एस.अहलुवालिया (झारखंड) :लालू प्रसाद यादव जी ने कहा कि एन.डी.ए. को बिहष्कार करने से पहले सोनिया गांधी जी को नमस्कार करके जाना चाहिए, प्रणाम करके जाना चाहिए था ...(व्यवधान)...इसका विरोध यहां नहीं होगा, इस सदन में नहीं होगा तो कहां होगा, विदेशों में होगा ...(व्यवधान)...

श्री सभापति : आप लोग प्रणाम की बात क्यों कहते हो, पहले बजट के बारे में कुछ कहिए तो सही ...(व्यवधान)...

श्री एस.एस. अहलुवालिया : बजट के बारे में तो बात हो रही है ...(व्यवधान)...

श्री सुरेश पचौरी: सर, हमारा आपसे अनुरोध यह है कि इस सदन की हमेशा से यह परम्परा रही है चाहे 1967 की या 80 के बाद की कि अगर लोक सभा सदस्य के नाम काउल्लेख किया है तो उसको विलोपित किया गया। आप कृपापूर्वक विलोपित करें। माननीय सदस्य रेलवे बजट पर ही चर्चा करें।

श्री सभापित : देखिए, माफ करना, बहुत सदस्यों ने बहुत कुछ कह दिया, वह तो छोड़ दीजिए। विलोपित नही रिकार्ड में रहना चाहिए ताकि आगे दुनिया देखे तो सही कि हम किस तरह से बोलते हैं ताकि अंदाज तो हो। बहुत शब्द निकालने पड़ेंगे। इसलिए मैं आपसे रिक्वेस्ट करना चाहूंगा कि पहले रेल बजट ...(व्यवधान)...

SHRI BALBIR K. PUNJ: Mr. Chairman Sir, I fully accept the concern which you have shown. But let me remind my friends on the other that Smt. Sonia Gandhi has also enjoyed the status of Cabinet Minister. And since she enjoyed the status of a Cabinet Minister, we can refer the the Cabinet Minister ...(Interruptions)...

MR. CHAIRMAN: No, she is not a minister ...(Interruptions)... She is not a minister ...(Interruptions)... she is not a minister ...(Interruptions)...

प्रो. राम देव भंडारी: सर, इसका भी संबध इस विषय से नहीं है। यह बार-बार विषय से बाहर जाकर बात कर रहे है।...(व्यवधान)... श्री संतोष बागड़ोदिया : अभी नए मैंबर्स की ट्रेंनिंग हो रही है पहले उसमें भेजिए इनको ।...(व्यवधान)...

श्री सभापति : आप तो सीधा बजट पर आइए।...(व्यवधान)...

प्रो. राम देव भंडारी: उसमें बोलने के लिए कुछ है ही नहीं। क्यों बोलेगें?

SHRI BALBIR K. PUNJ: And, Sir, I would also refer to ...(Interruptions)...

श्री सभापति : आप तो बजट पर ही बालिए ...(व्यवधान)...

SHRI BALBIR K. PUNJ: Sir, coming back to the budget proposals ...(Interruptions)..., Shri Lalu Prasad was very humble, he very gratefully accepted... (Interruptions)...

श्री सभापति : ज्यादा अच्छा होगा कि आप लालू जी का नाम नहीं लें। रेल मंत्री को सम्बोधित करें।

SHRI BALBIR K. PUNJ: Sir, the Railway Minister was very humble-which is his usual temperament-he referred to the guidance he had received from the Prime Minister. He also gratefully acknowledged the help he had received from the Congress President, Shrimati Sonia Gandhi. Now, it raises a basic issue that if he had discussed the budget proposals with Shrimati Sonia Gandhi before the presentation of the budget to the Parliament, has he been sworn to secrecy to the Constitution, or did he swear by...(Interruptions)...

श्री सभापति : ऐसी बात कोई नहीं आई है । ...(व्यवधान)... माननीय सदस्य, रेलवे के बजट पर बोलें तो ज्यादा अच्छा रहेगा । ...(व्यवधान)...

SHRI MOTILAL VORA (Chhattisgarh): He is not at all clear ...(Interruptions)... Sir, this is a very serious matter ...(Interruptions)... This is a very serious matter ...(Interruptions)... Mr. Chairman Sir, he should be restrained from speaking ...(Interruptions)...

SHRI BALBIR K. PUNJ: But, Mr. Chairman, Sir, this House has the right to know whether the Railway Minister has discussed the budget proposal, as he had revealed in the other House, with Shrimati Sonia Gandhi ...(Interruptions)... before presenting the Budget in the House or not? This House has the right to know, Sir ...(Interruptions)...

SHRI SANTOSH BAGRODIA: He can discuss it with anybody in the world ...(Interruptions)... he can discuss it with anybody. Don't you know this? ...(Interruptions)...

श्री सभापति : रूल्स क्लीयर है । "Incidents that happen in Lok Sabha need ot be referred to in the Rajya Sabha." आप सीधे बजट पर बातें करिए ।

SHRI BALBIR K. PUNJ: Sir, I am not talking of any incident. I am referring to the speech of the Railway Minister ...(Interruptions)...

SHRI S. S. AHLUWALIA: This is regarding the presentation of the Railway Budget in the Lok Sabha ...(Interruptions)...

SHRI BALBIR K. PUNJ: That way we are discussing the Railway Budget... (Interruptions)...

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: He is always referring to the proceedings of the other House. ... (Interruptions)...

SHRI BALBIR K. PUNJ: Sir, the presentation of the Railway Budget in the Lok Sabha was seen by the entire world ...(Interruptions)...

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: So what? ...(Interruptions)... So far as this House is concerned, this is a wrong method. A wrong precedent has been set up. We cannot refer to the Lok Sabha proceedings in this House ...(Interruptions)... I would like the Leader of the Opposition to enlighten us as to whether he is correct or I am correct ...(Interruptions)... I would like the Leader of the Opposition to enlighten us, not Shri Ahluwalia I would request the Leader of the Opposition to enlighten us whether he can refer to the proceedings of Lok Sabha. This is my challenge.

SHRI S.S. AHLUWALIA: Sir, he has asked a question whether ...(Interruptions)...

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: Sir, the proceedings of Lok Sabha cannot be discussed in this House. We are not going to be 'Ahluwaliaised'. We want the Leader of the Opposition to discuss this matter.

We want the Leader of the Opposition to clarify.(Interruptions)....

श्री सभापित : इनको बोलने दीजिए।...(व्यवधान)...

श्री मती सरला माहेश्वरी (पश्चिम बंगाल) : सभापति महोदय, इनके पास रेल बजट पर बोलने के लिए कुछ नहीं हैं।...(व्यवधान)...

श्री राजू परमार (गुजरात) : सर, आपके कहने के बावजूद भी ...(व्यवधान)...

SHRI S.S. AHLUWALIA: He is putting a question: Was the draft Budget shown to Sonia Gandhi or not? What is wrong in it? ...(Interruptions)... Let the reply come from the Railway Minister. ...(Interruptions)... Let the reply come from the Railway Minister. ...(Interruptions)...

SHRI SANTOSH BAGRODIA: He has written letters to every Member of Parliament. He has taken the advice of every Member of Parliament.(Interruptions)....

SHRI S.S. AHLUWALIA: No, no In the proceedings he has mentioned (Interruptions)....

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: Which proceeding he is referring to?... (Interruptions)...

श्री सभापति : आप बैठिये । आप बैठिये । ...(व्यवधान)...आप कैसे इस इन्फेरेंस पर पहुंचे कि उन्होनें बजट दिखाया है ? ...(व्यवधान)...

SHRI S.S. AHLUWALIA: Sir, while presenting the Railway Budget, he said that he was thankful to Sonia Gandhi that due to her blessings. ...(Interruptions)... he could present good Budget. ...(Interruption)...

श्री सभापति : नहीं, इससे यह इन्फेरेंस नहीं निकलता है।...(व्यवधान)...माफ करना इससे यह इन्फेरेंस नहीं निकलता है कि बजट दिखाया गया है।...(व्यवधान)...

श्री राजु परमार : लालु जी ने आभार प्रकट किया है।...(व्यवधान)...

SHRI S.S. AHLUWALIA: No. Sir, this is a question. ... (Interruptions)...

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: It is a wrong precedent. ...(Interruptions)... I stick to my point of order. ...(Interruptions)...

SHRI S.S. AHLUWALIA: What is wrong in it? ...(Interruptions)... The draft Budget can only be shown to the Cabinet member. ...(Interruptions)... This is a very genuine question. ...(Interruptions)...

श्री के. रहमान खान (कर्णाटक) : अहलुवालिया जी, क्या आपके पास और कुछ बोलने के लिए नहीं है ? ...(व्यवधान)...

श्री सभापति : आप बैठिए तो सही । ...(व्यवधान)... एक मिनट । आप सब बैठिए।...(व्यवधान)... आप बैठ जाइये । आप बैठ जाइये । ...(व्यवधान)... यह कैसे इन्फरेंस निकलता है ? ...(व्यवधान)... सरला जी, आप बैठिए।...(व्यवधान)...

श्री रवि शंकर प्रसाद (बिहार) : प्रफुल्ल पटेल जी, सीपीएम के दफ्तर जाते है। ...(व्यवधान)...

श्री सभापित : वहां जाना कोई गुनाह है क्या ? ...(व्यवधान)... एक मिनट । मैने आप लोगों के भाषण सुने हैं, जिन भाषणों में आपने यह कहा है कि हमने अटल जी से सलाह करके यह किया है । ...(व्यवधान)... अटल जी से कोई दिक्कत नहीं है । ...(व्यवधान)... अगर सोनिया गांधी का नाम लिया है । सोनिया गांधी की कृपा से कह दिया है तो यह बजट दिखाने का काम नहीं है । मैं इस पाइंट पर एग्री नहीं करता हूं । ...(व्यवधान)...

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: We are not discussing all these things. ...(Interruptions)...

श्री सभापति : आप बोलने दीजिए।...(व्यवधान)...

श्री एस.एस. अहलुवालिया : सर, ड्राफ्ट बजट केवल केबिनेट में दिखाया जाता है किसी और को नहीं।...(व्यवधान)...

SHRI BALBIR K. PUNJ: Mr. Chairman, Sir, I respect the ruling which you have given that an incident which took place in the other House can't be discussed here. Then, how can the Budget presented in the Lok Sabha be discussed in Rajya Sabha?

MR. CHAIRMAN: Only copies are laid on the Table of the House. ...(Interruptions)...

श्री सुरेश पचौरी : सर, रेल बजट इस हाउस में रखा गया है।...(व्यवधान)...

श्री दीपांकर मुखर्जी: यही सब बाहर लिखते होगे ? यह जर्नलिस्ट है, विद्वान है 16 साल में इतना भी नहीं सीखा कि बजट ...(व्यवधान)... इतने बड़े विद्वान है । ...(व्यवधान)... ऐसे ही जर्नलिज्म भी करते रहे होंगे । ...(व्यवधान)... We are sorry on his behalf. We apologise on his behalf to you that after five years, he is not aware how Budget papers are laid.

SHRI BALBIR K. PUNJ: We discuss the Budget here because that has been laid on the table of the Rajya Sabha, but at the same time, when the Budget was presented ...(Interruptions)...

श्री सभापति : मैं हाउस एडजर्न कर दूं क्या ? ...(व्यवधान)...

श्री एस.एस. अहलुवालिया : आप लीडर आफॅ दी हाउस.....

श्री सभापति : नहीं। लीडर आफँ दी हाउस क्या होता ? आप बोलिए न। पेज 166-राज्य सभा क्तिंग्ज एंड आबॅजरवेशंस आप देखिए उसमें on 21st of April, 1987, while Prof. Chandresh P. Thakur was making a speech on the short Duration Discussion on the purchase of guns from Bofors of Sweden, he referred to what happened in Lok Sabha, the previous day. Disallowing the Member to make any reference to what has happened in the other House, the Chairman observed, That is not necessary. I want to tell the Member that except points of policy, etc., you do not discuss what happened in the other House in this House."

SHRI S.S. AHLUWALIA: We are discussing a policy matter.

MR. CHAIRMAN: That is not a part of policy.

SHRI S.S. AHLUWALIA: We are discussing a policy matter ... (Interruptions).

श्री सभापति : उन्हें बोलने दो । ...(व्यवधान)... आप बहुत हो गया, आप बैठ जाइए।

श्री राजु परमार : अहलुवालिया जी, बहुत हो गया । अब बहुत हो गया आप बैठ जाइए।

एक माननीय सदस्य : उनके पास बोलने के लिए कुछ नहीं है।

SHRI BALBIR K. PUNJ: Mr. Chairman, Sir, if an hon. Minister makes a statement in either of the Houses, it can be discussed in either of the Houses.

श्री संतोष बागड़ोदिया : आप बाद में बोलिए, पहले बजट की कॉपी ले लीजिए । आपने बजट देखा नहीं है ।

श्री सभापति : देख लिया है, बजट देख लिया है। सब कागज लेकर आए है। ...(व्यवधान)...

श्री बलबीर के. पुंज: वह तो सिर्फ सोनिया जी ने देखा है । वह तो लालू जी ने भी नहीं देखा, सिर्फ सोनिया जी ने देखा था।...(व्यवधान)...

श्री सभापति : आप बोलिए न।

श्री बलबीर के. पुंज: वह तो सिर्फ सोनिया जी ने देखा था।

श्री सभापति : यह ठीक नहीं है।...(व्यवधान)...

श्री सुरेश पचौरी: आपके जमाने में आपने सबको रेलवे बजट दिखाया था? ...(व्यवधान)...

श्री राजू परमार : क्या बात कर रहे हो ? ...(व्यवधान)...

श्री सभापति : आप बोलिए न।

प्रो. राम देव भंडारी: आपके अध्यक्ष नोट लेते हुए देखे गए। आपके मिनिस्टर नोट लेते हुए देखे गए। आपके एक अध्यक्ष ने दलित की जमीन हड़प ली।

SHRI BALBIR K. PUNJ: Mr. Chairman, Sir, this Railway Budget was the first financial Bill which was presented by Dr. Manmohan Singh's Government. Dr. Manmohan Singh is known for his honesty and clean image. In fact, he is also known as the father of reforms in this country. He was instrumental in dismantling the socialist wise-like grip, which had strangulated the economy for 40 years and a creed, which has propagated by our friends in the CPM and the Congress. But, Sir, it is very ironical that Laluji should have been the first one to present a financial Bill of Dr. Manmohan Singh's Government. While Dr. Singh is a man with a clean and honest image, Lalu Prasad Yadavji, the Railway Minister is a man who has a tainted reputation. The man had been involved in many corruption cases...(Interruptions). He has been arrested and...(Intervptions)... Sir, a person who was thought to be unfit as the Chief Minister, how could he be considered as a suitable person to present the Budget? Then, Sir, as I said earlier, Dr. Manmohan Singh is the father of reforms in this country. but if you look at the Railway Minister's Budget, it has the Lalu stamp all over, but has no reformist angle. It is basically a populist Budget where lot of things have been promised to a number of people, but nobody knows from where these resources are going to come from. Sir, I would like to compare Laluji's Budget with a sort of box of burfi which has lot of sweeteners in it, very little khoya and a sloppy packaging. Sir, a lot have been said about the use of Khadi and Kullars. I ask my colleagues and friends from the other side, "When you get into a railway train, what is your first concern?" What is the first concern of any passenger for that matter? The first concern is whether the journey is going to be punctual, comfortable and safe. You don't think whether you are going to drink your tea in a kullar or a ceramic cup or a glass or a plastic cup. You don't think whether you are going to have a mattha, chhaach or a coffee or a tea. People have various choices, and, I think, every choice is as good as the other. Now, regarding the safety angle, though he has relied heavily on the Khanna committee Report, but if you look at it seriously, it is nothing more than a lip service. Sir, it may be just a coincidence that after the new Railway Minister has taken over, there has been a spate of dacoities and that too particularly in the State from where he comes. Railway journey has become a risky proposition. In fact, my advice to all the railway

passengers would be to go in for a heavy insurance before they get into a train. You are talking about kullars, but you don't know whether your life is going to be safe; you are talking about chhaach but you don't know from where the next bullet is going to come; you are talking about khadi, but you don't know that very khadi may be used to strangulate you while you are travelling by the people who get into the train all the time. In fact, he has been the Railway Minister only for 50 days and may be on a average— I have not done the calculation, but if you go by the media report— it appears that there is a dacoity almost a day. So, there is no concern on the safety except dusting up the old Khanna committee Report which has been reiterated year by year. As I said earlier, it may be just a coincidence that the incidence of crime has gone up heavily after Laluji has become the Railway Minister. Somebody was saying "जब सइयां भए कोतवाल तो अब डर काहे का" I don't know whether this saying holds good or not. In fact, if you recall the one-hour-fifty-minute speech, probably the longest speech that any Railway Minister has made, it looks more like a nautanki. It was an entertainment show for the masses. I will make a suggestion to hon. Dr. Manmohan Singh, maybe he considers the suggestion seriously, to re- designate Laluji as the Minister for entertainment and not as the Minister for Railways.

श्री सभापति : ऐंटरटेनमेंट और रेलवे, दोनों कामों को एक मिनिस्टर नहीं कर सकता।

SHRI BALBIR K. PUNJ: Sir, you are the Chairman and it is the prerogative of the Chairman. ..(Interruptions).

प्रो.राम देव भंडारी: सर, उन्हीं के ऐटरटेनमेंट की वजह से उस तरफ है आज ये लोग।

श्री सभापति : बैठिए ,बैठिए।

SHRI BALBIR K. PUNJ: Sir, as I said earlier, nobody knows from where the money is to come. The schemes have been promised—August Kranti, that kranti, this train, that train. If you look at the resources, there is a total mismatch between the resources which are available with the Railways and the announcements which have been made by the Railway Minister. Sir, it is striking that merely one paisa..(*Interruptions*).

श्री रिव शंकर प्रसाद: आदरणीय सभापति जी, एक व्यवस्था का सवाल है। आदरणीय रेल मत्री तो उपलब्ध नहीं है और रेल विभाग का कोई अन्य मंत्री भी उपलब्ध नहीं है।

कुछ माननीय सदस्य : है न, ये बैठे हैं।

श्री संतोष बागड़ोदिया : आप तो इतना हल्ला कर रहे थे जब इंट्रोडक्शन हो रहा था, इसलिए आपने पहचाना नहीं।

श्री सभापति: ये केवल लालू जी को ही पहचानते हैं। बोलिए पुंज जी।

SHRI RAVI SANKAR PRASAD: All right, I hope he is following this.

SHRI BALBIR K. PUNJ: Chairman, Sir, as I am saying, there is a total mismatch between the commitment and the resources which are available with the Railway Minister. Sir, it is striking that merely one paisa of one rupee earned by the Railways goes to the development of the system and two paise to the safety fund. That means out of 100 paise, only three paise are available for the renovation of the system and for the safety of the passengers. Some 31 paise is spent on wages, 17 paise on fuel and 14 paise on pensions and other benefits.

Sir, the Railways have gone in for Rs. 14,498 crore outlay for the year, with just Rs. 2,878 crores from the internal resources. Apart from the allocations from the General Budget, the Railways will resort to market borrowings of Rs. 3,400 crores. Sir, of coruse, this trend has been continuing over the last few years, but the quantum of the borrowings running into Rs. 3,400 crores without a matching arrangement to put this money to productive use does not say well for the health of the Railways.

[THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA) in the Chair]

Sir, the Railways had orginally set a target of 540 million tonnes of originating freight, which was later revised to 550 million tonnes in the interim Budget an even this higher target has been exceeded due to buoyancy in the economy. In fact, this goes to the credit of the earlier Government, the NDA Government, and also to the Railway Minister that we have done very well both in terms of the freight and passenger movement and the revenues and the targets have been exceeded. The growth in freight has been over 5 per cent per annum in the past two years and that of passenger traffic around 3 per cent. Considering the limited scope available for curtailing expenditure—most of it is or staff, pension and fuel-the reductions claimed year after year calls for close scrutiny to assure us that it is not at the cost of maintenance and replacement of assets. Sir, I was talking about the numerous schemes which the hon. Railway Minister has announced. If you go at the track record, and when I use the world 'track record' the pun is intended and then you realise that

most of the schemes are likely to remain on paper and just bravado. Sir, if you remember a fortnight back the hon. Railway Minister had announced a new scheme with a lot of hype and media fanfare that air-conditioned coaches will leave from Patna laden with vegetables and reach New Delhi and that new avenues of prosperity will be opened for the farmers of Bihar and also the people of Delhi will be getting fresh vegetables. Sir, only one train-the very first train which was flagged off by Shri Lalu Prasad Yadav and, I think, it was on 23rd June-has come and nobody knows what has happened later on. The entire scheme has fallen off the tracks. Was any market survey done before the scheme was launched? Were farmers contacted and the estimates for wage and the amount of vegetables available in Patna for shipment to Delhi found out? Did anybody do any study as to how much time it takes to ship the vegetables in air-conditioned containers from Patna to Delhi and whether the Delhi traders were willing to buy? This entire scheme has just proved a flop. Sir, if you look at the Budget Speech, therein a proposal has also been made for setting up a plant to manufacture wheels at chapra. We already have two plants manufacturing steel wheels at Bangalore and Durgapur. Was any study done whether we can meet our demand for increased number of wheels by increasing the capacity, by augmenting the capacity at Bangalore and Durgapur? Has any study been done? Have specialists been consulted whether we can make good quality wheels which will be good enough for the Railways' use by recycled steel? There are no answers given to these questions. In fact, the hon. Railway Minister has by just waving a magic wand put up schemes and made annoncements without sharing with the House, or with the country, as to what are the bases for these projections and on what basis this investment which may virtually be of Rs. 1,000 crores, has been committed to the people living in Chapra. If you look at it, Sir. we already have schemes worth Rs. 40.000 crores, which are still to be implemented, and they have been stalled for want of funds. In fact, one study shows that it will take about 50 years, at the present pace, to complete those schemes! You don't have resources to complete the existing schemes; you are short of funds, with the result that whatever little money that you have invested in those schemes is going waste, and you are committing your self an expenditure of almost Rs. 1,000 crores for putting up the plant at Chapra! In fact, Sir, the way the new Railway Minister has conducted himself, that the plant has been put up in chapra.the airconditioned coaches for carrying vegetables has to start from Patna, it appears that, if the Railway Minister is going to announce tommorrow a

train from Delhi to Jammu, maybe, it will have to go *via* Patna or Gaya! Because the Railway Minister seems to be acting in a manner that it will benefit has party in the next State Assembly elections! Are we going to run the Railways of the country, keeping in mind the State Assembly elections? Is it going to be the criterion? This is a question which needs to be answered.

The state of rail travel in Bihar is well described in a newspaper report of a train from Patna to Madhepura, from where the hon. Minister has been elected. It says: "278 kms., 14 hours, 2 trains, and one nightmare". That is the heading." No lights in the train because batteries have been stolen. No tickets being issued because the computer is permanently out of order. The poor are served in the train by the ticket checking staff themselves issuing the "ticket" with an addition of Rs. 50/per ticket for the "Privilege"." That means under-the-table payment by the poor of Bihar for getting a ticket from Patna to Madhepur. Now, Sir, it raises a basic issue. If that is the model, should we think in terms that this model is going to be repeated all over the railways?

Sir, there is not even a single word mentioned by the hon. Minister about the trains which are stopped unscheduled at various places. Then, about the recruitment of GRP men "in-house", an announcement has been made. How is the recruitment going to be made? And why only the recruitment of GRP men? Are we going to absolve the State Government of its responsibility to maintain law and order along the railway tracks in the trains? Or, are we bringing them in for their responsibility? Sir, the hon. Railway Minister said that he wants to make the Indian Railways(Interruptions)... Mr. Vice-Chairman, Sir, please hear me.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA): Go ahead. I am listening to you.

SHRI BALBIR K. PUNJ: Okay; Sir.

Mr.Vice-Chairman, Sir, the hon. Railway Minister claimed in this speech that he wants to make the Indian Railways the number one railways in the World. We all want that. Sir, I was talking about the track record of the hon. Railway Minister. I gave an illustration as to how that the "Vegetable Special" had been handled, and I would like to draw your attention as to how the Bihar State owned the Road Transport Corporation buses.

श्री एस.एस. अहलुवालियाः उपसभाध्यक्ष जी, मैं एक चीज की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा। कुछ दिनों पहले राज्य सभा में हमको एक ऍटिकेट की किताब भेजी गयी है और उसमें कहा गया है कि अगर चेयर किसी सदस्य को बुलाए तो वहां जाए अन्यथा कोई भी सदस्य चेयर के पास जाकर बात न करे। अगर यह वार्तालाप का सिलिसला चलता रहेगा तो यह जो ध्यानकर्षण करने की बात होती है कि चेयर से सीधी बात की जाए, वक्ता चेयर से सीधी बात करे, तो वह चेयर से बात नहीं कर सकता।

उपासभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया) : ठीक है, बोलिए।

SHRI BALBIR K. PUNJ: Sir, the train of my speech is subjected to the chain pulling by the people from the other side of the House and this side also.

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया) : आप ता बहुत अच्छे वक्ता है, आप को कोई इन्ट्रप्ट कर ही नहीं सकता। आप बोलिए।

SHRI BALBIR K. PUNJ: Sir, the hon. Railway Minister claims that he is keen to make the Indian Railways as the number one railway service in the world. Now, if you go by the track record, you will find that the Bihar State road Transport service, a service which has been under his domination for a decade-and-a-half, has virtually been reduced to rust and waste. Virtually, no road service exists in Bihar today. Now, if that is the track record, how seriously can we take the Railway Minister's claim that he plans to make the Indian Railways as the number one railways in the world? (Interruptions)...

Mr. vice-Chairman, Sir, the rhetoric or *nautanki*of making the Indian Railways into number one will fool no one. There is no proposal to reduce the expenditure, increase the revenue or improve the funds the Railways could generate to modernise, repair and restructure the largest transport system. Instead, the whole approach is to reduce the system into a "Ma-Bap Gravy service" where the Railway Minister sits like an old *seth* throwing freebies everywhere. But there is nothing like free lunch. If you take out from one pocket, naturally that pocket will come down. In fact, he has also claimed that his "Ma-Bap" approach has been blessed by the hon. Prime Minister I don't know whether that is correct or not.

Sir, a starting instance of total irresponsibility is the attitude towards the Golden triangle Project. The Railway Budget Speech does not say anyting about it. Yet, we all know that the scheme is of vital importance to the Railways. Over 65 per cent traffic and major reveue come from that golden Triangle. The NDA Government had committed to invest Rs. 15,000 crores to improve its capacity. Now, I don't know whether this new Government has abandoned it in favour of *kulhars* or khadi or whether it continues to be on the agenda of the new Government because the Railway Budget Speech seems to be silent about it.

Sir, if you look at the Railway Budget Speech, you will find that most of the good schemes have been lifted bodily from the proposed scheme of the NDA Government. The anti-collision device, the early warning device, etc., were on test in the last few years. The Railway Minister speaks of "Village on Wheels". But he does not give us any figure as to what would be the cost of passengers. In fact, he says whatsoever the passengers can afford. Now, what is going to be the yard stick as to how much the passengers can afford, and, if there is any deficiency, which is bound to be there, how will the deficiency be met? Sir, the Railway Minister, of course, has done well by not touching the railway fares and freights. In fact, the Railways is facing a stiff competition from the airlines and the road transport. Last year, the passenger growth rate in the Railways was three per cent, while the economy had grown at a rate of 8 per cent. It is a common knowledge that when the economy grows, then there is a corresponding increase in the movement of freights and in the movement of passengers. In fact, if we look at the figures, we find that the growth rate in the passenger movement has not kept pace with the growth of the economy and it is largely due to the fact that there is a competition to the railways in terms of services and in terms of prices by the airlines and also by the roadways.

THE VICE CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA): Mr. Punj, your party has one hour and fifty-four minutes.

SHRI BALBIR K. PUNJ: Sir, I will take only 60 seconds more.

THE VICE CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA): You can speak. It is just for information. There are other speakers also. I have no objection. You can take all your time.

SHRI BALBIR K. PUNJ: If the Railways do not pull up its sockswhich I doubt,, whether it can do under the Minister who believes more in nautanky and less in solid work-then there is no doubt that the Railways can have any hope. Sir, I thank you for giving me this opportunity and allowing me to share my thoughts. श्री मूल चन्द मीणा (राजस्थान): उपसभाध्यक्ष महोदय, इस सदन में रेलवे बजट पर चर्चा हो रही है और अभी मेरे दोस्त ऑपोजीशन पार्टी से पुंज साहब बोल रहे थे। मुझे बहुत अफसोस हो रहा है यह कहते हुए कि मेरे दृष्टिकोण से मैं उन्हें अच्छा विद्वान समझता था, लेकिन उन्होनें जो अपनी विद्धता का परिचय जो इस हाऊस के मैम्बर नहीं थे, जो यहां के सदस्य नहीं थे उनके बारे में चर्चा करके दिया, जिसके लिए बीच में चयर को इंटरवीन करना पड़ा।

महोदय में यह मानता हूं और यह दुर्भाग्य भी समझता हूं कि कल जब रेल बजट पेश किया गया तो इस देश की संसद की ऑपोजीशन ने बायकाट किया। जिस रेल बजट के अदंर गरीब की सुविधा की बात की जाए, गरीब के हितों का ध्यान रखा जाए उस रेल बजट का बिहिष्कार करना एक दुभाग्यपूर्ण बात है। कल का हित गरीबों के लिए ऑपोजीशन की ओर से दुर्भाग्यपूर्ण माना जाएगा। जो रेल बजट पेश किया गया है, वह कांग्रेस की रीति, जो पंरपरा चली आ रही है गरीब की बात करने की, बजट पेश किया गया है, यह कांग्रेस की रीति,जो परंपरा चली आ रही है गरीब की बात करने की, उस अनुसार है। पिछले चुनाव में एक नारा दिया गया था-"कांग्रेस का हाथ, गरीब के साथ"और हमारी नेता सोनिया गांधी ने देश की जनता के सामने कुछ वायदे किए थे ...(व्यवधान)... नाम लेना पाप है क्या ...(व्यवधान)... किसी पर आरोप लगाने की बात रही है मेरी नेता है तो मैं बात नहीं करूंगा।

SHRI BALBIR K. PUNJ: Sir, he is referring to the Member of the other House. (*Interruptions*).

SHRI ANAND SHARMA (Himachal Pradesh): Sir, he is not referring to the proceedings of the other house. What is their objection? (Interruptions). He is referring to the leader. [Interruptions).

श्री मूल चन्द मीणाः जो मेरी नेता है, क्या उनका नाम मैं नहीं ले सकता। (व्यवधान) SHRI BALBIR K. PUNJ: It is not permitted.

SHRI ANAND SHARMA: Sir, is his objection permissible under the rules? (Interruptions).

श्री एकनाथ के. ठाकुर (महाराष्ट्र) : सर, यह गलत बयान हो रहा है ।(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया) : मिस्टर ठाकुर,आपने कोई परिमशन नहीं मांगी, आप बैठ जाइए। मीणा जी, आप बोलिए।

SHRI ANAND SHARMA: Sir, I am on a point of protest., .(interruptions) I just want to draw the attention of the Chair...

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): आप लोग बैठ जाइए । नॉन इश्यु को इश्यू मत बनाइए । मीणा जी, आप बोलते रहिए । श्री मूल चन्द मीणा: उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं कह रहा था "कांग्रेस का हाथ, गरीब क साथ" यह एक नारा लेकर हमारी नेता सोनिया गांधी जनता के बीच में गई थी और जनता के साथ, गरीब के साथ सोनिया जी ने कुछ वादे किये थे। इस बजट ने उन वादों को पूरा किया है क्योंकि यह एक विश्वास की बात है। चुनाव के अंदर हमारे सामने बैठ हुए लोग और उनके नेता भी वादा करते है, इन्होंनें जनता से पांच साल पहले जो वादे किए थे वे पूरे नहीं किए इसलिए जनता ने इनको वापिस इधर से उधर भेज दिया सोनिया गांधी की बात पर विश्वास किया। लालू प्रसाद यादव जी ने अपना भाषण देते वक्त एक महान महिला के लिए महान कह दिया।

श्री बलबीर के. पुंज : यह देखिए।

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): एक मिनट, एक मिनट, मैं बोल रहा हूं,आप क्यों घबरा रहे है। मीणा जी, आप इसको ऐवाएड करिए, आप क्यों कंट्रोवर्सी में जा रहे है। थोड़ा सा ऐवाएड करिए न, आप नेता बोलिए, कुछ ऐसी बात...(व्यवधान)... आपको मैं हेल्प कर रहा हूं फिर भी आप हमको हेल्प नहीं कर रहे है। आप चुप रहिए। मीणा जी, आप इसको ऐवाएड करिए, आप अपने नेता को क्यों कंट्रोवर्सी में डाल रहे है।

श्री मूल चन्द मीणा : उपसभाघ्यक्ष महोदय, इसमे कंट्रोवर्सी कुछ नहीं है । जो महान है, उसको महान नहीं कह सकते ? ...(व्यवधान)....

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया) : क्या नहीं कह सकते , आप भी समझते हैं । आप समझतें हैं, आप ऐवाएड करिए । आप प्लीज़ एवाइड करिए ।

श्री मूल चन्द मीण : उपसभाघ्यक्ष महोदय, सन 2004-2005 का बजट पेश किया गया, जिसकी वार्षिक योजना 11,265 करोड़ सुरक्षा से संबंधित 2,933 करोड़ है। टोटल जोड़ा जाए तो वार्षिक योजना 14,198 करोड़ की है।

एक माननीय सदस्य : रूपया कहां से आएगा ?

श्री मूल चन्द मीणा : अभी मैं बताता हूं कि कहां से आएगा, कहां जाएगा।

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया) : मीणा जी, आपको जवाब देना जरूरी नहीं है,आप अपनी बात बोलते रहिए।

श्री मूल चन्द मीणा : उपसभाध्यक्ष महोदय,रेलों ने इस देश की एकता को बनाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया और राष्ट्रीय एकता बनाने में....(व्यवधान)...

SHRIN. JOTHI (Tamil Nadu): Excepting Tamil Nadu... (Interruptions) Nothing for Tamil Nadu...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA): Your turn will come and then you say what has been given and what has not been given.

If everybody starts speaking like this, ...(Interruptions) No; you are not given the permission ...(Interruptions) You can talk about injustice when your turn comes up. ...(Interruptions) When your turn comes up, you will speak ...(Interruptions) It does not mean that you will interrupt like this. - Please, don't interrupt, मीणा जी, आप बोलिए। नो इंटरप्शन प्लीज़। बोलिए

श्री मूल चन्द मीणा: उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं यह कह रहा था कि रेलो ने इस देश की एकता को बनाने में महत्वपूर्ण रोल अदा किया। रेलवे इस देश के लोगों के लिए यातायात का सबसे बड़ा साधन है। इस देश के 1,45,00,000 लोग रोज रेल से यात्रा करते हैं। पिछले कुछ दिनों में हवाई जहाजों की दुर्घटनाएं हुई, रेलों की दुर्घटनाएं हो रही थी। हवाई जहाजों की कई दुर्घटनाएं हुई तो लोग डरने लगे जहाजों से या रेलों से यात्रा करने में...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया) : आप लोग इंटरप्ट मत कीजिएं बोलने दीजिए न, अब कोई कंट्रोविर्शियल बात तो वे बोल नहीं रहे हैं।

3-00 PM

श्री मूल चन्द मीणा: दुर्घटनाएं स्टार्ट हुई, इन दुर्घ्टनाओं को रोकने के लिए पिछले तीन-चार साल से कार्यक्रम रेवले विभाग का चला। जहां तक रेल दुर्घटनाओं का सवाल है, वर्ष 2000-01 में 473 रेल दुर्घटनाएं हुई थी। उसके बाद रेल विभाग ने कुछ सुधार किए और वर्ष 2003-04 में 325 रेल दुर्घटनाएं हुई। इस तरह इनमे कुछ सुधार हुआ।

SHRI BALBIR K. PUN J: Compliment the NDA Government for that. एन.डी.ए. गवर्नमेंट में हुआ यह । Why are you not saying that?

श्री मूल चन्द मीणा : मैं कब कह रहा हूं कि NDA गवर्नमेंट में नहीं हुआ मैं सुधार की बात कह रहा हूं, आप नहीं सुनना चाहते तो क्या करें...(व्यवधान)...

एक माननीय सदस्य : पिछले एक महीने के बारे में और बता दीजिएगा कि जितनी दुर्घ्टनाएं हुई ।

श्री मूल चन्द मीणा: उपसभाध्यक्ष महोदय, इसके लिए रेल मंत्री जी ने अपने बजट भाषण में इस ओर ध्यान दिया है कि ये दुर्घटनाएं कैसे रोकी जाएं रेलवे के सामने एक ही सबसे बडी चुनौती है कि यात्रियों को किस तरह अपने गंतव्य स्थान तक सुरक्षित पहुचाया जाए। इस रेल बजट के अंदर रेल मंत्री जी ने इसको बात बहुत प्राथमिकता दी है और पिछले बजट की तुलना में इसके लिए अधिक बजट रखा है। दुर्घटनाओं को होने से रोकना, रेल पथों को सुधारना, पुराने पुलों का नवीनीकरण, उनका पुररुद्धार करना, सिंगल गतिरोध को दूर करना, नवीनीकरण करना, बिनाफाटक के क्रॉसिंग्ज पर चौकीदार लगाना - इस रेल बजट में इन चीजों को प्राथमिकता से लिया गया है। नयी

टेक्नोलॉजी का प्रयोग करके लोगों को सुरक्षित रेल यात्रा की सुविधा देने के लिए इस रेल बजट में व्यथस्था की गई है।

उपसभाध्यक्ष महोदय, इस देश में रेलों में आग लगाने की कई घटनाएं सामने आई हैं। इसके लिए रेल मंत्री जी ने यह अच्छा काम किया है कि उन्होंने ज्वलनशील और विस्फोटक पदार्थों का रेलों में ले जाने पर प्रतिबंध लगा दिया है। इससे निश्चित रूप से यात्रियों की सुरक्षा में सुधार होगा और यात्री सुरक्षित महसूस करेगें। हो सकता है कि इन घटनाओं में कुछ मनचले लोगों और कुछ ऐसे संगठनों का हाथ हो जिनका काम आदतन लोगों में टैरर पैदा करना है। यदि ऐसे लोगों से मुकाबला करना है तो हम सबको मिलकर रेल मंत्री जी को सहयोग देना चाहिए जिससे रेलों में सुरक्षा बढ़ सके।

उपसभाध्यक्ष महोदय, रेलवे में सुरक्षा से सबंधित कई कदम उठाने की बात रेल मंत्री जी ने कही है। हमारे यहां रेलवे सुरक्षा बल लेकिन जितने आवश्यकता है, उतना नहीं हैं। इसके लिए रेल मंत्री जी ने रेलवे सुरक्षा बल के अंदर 8,000 लोगों की नियुक्ति की बात कही है। उस नियुक्ति में शैडयूल्ड कास्टस, शैडयूल्ड ट्राईब्ज, अल्पसंख्यक, ओ. बी.सी.विकलांग, आतंकवादियों के द्वारा मारे गए लोगों की विधवाओं को आरक्षण देने की बात कही गई है।

मैं रेल मंत्री जी को इस बात के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहूंगा कि यिद गरीब के हित की बात कहने वाला, सोचने वाला इस देश का कोई संगठन है तो कांग्रेस पार्टी ही एक ऐसा संगठन जो गरीब के हित की बात सोचता है और उसी के आधार पर रेल मंत्री जी ने यह बजट बनाया है। रेल मंत्री से मैं यह निवेदन करना चाहूंगा कि आप रेलवे सूचना प्रणाली में सुधार की बात कर रहे है और कानूनी प्रणाली में सुधार की बात कर रहे हैं और करनी भी चाहिए, क्योंकि रेलों के आने-जाने में विलम्ब होता रहता है तथा इसकी प्रोपर्ली सूचना यात्रियों को नहीं मिल पाती है जिससे यात्रियों को बहुत असुविधा होती है। यदि हम नई दिल्ली और पुरानी दिल्ली स्टेशनों की बात करें तो वहां टेलीफोन पर सूचना देने वाले को ही पता नहीं रहता कि अमुक ट्रेन कब आएगी और कब जाएगी। इसलिए इस ओर विशेष ध्यान दिया जाए तथा प्रोपर्ली लोगों को सूचना मिले ताकि यात्रियों को प्लेट फार्म पर ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़े और सही टाइम पर प्लेट फार्म पर जाकर रेल यात्रा कर सकें।

सुरक्षा के इंतजाम के लिए रेल मंत्री जी ने सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए और उसको सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाया है। बंगलौर में 10 करोड़ रूपए की लागत से अंतराष्ट्रीय मापदंड के अनुरूप बचाव एंव चिकित्सा राज्य संस्थान स्थापित किया जाएगा। रेलवे प्लेट फार्म और रेलवे स्टेशनों पर सुरक्षा की दृष्टि से रेलवे मंत्री जी ने जी.आर.पी. और आर.पी.एफ. को कुछ नई जिम्मेदारियों दी है। कुछ स्टेट्स की राज्य पुलिस, जो अधीनस्थ पुलिस है, उसको भी जिम्मेदारियां दी है। यात्रियों को जो असुरक्षा प्लेट फार्म पर महसूस होती है और जब इन विभागों के पास नई जिम्मेदारियां आएगी तो निश्चित सुविधाएं मिलेंगी, सुरक्षा मिलेगी और लोग अपने को

सुरक्षित महसूस करेंगे। रेलवे यात्रा सुविधाओं के लिए 215 रूपए की एक स्पेशल व्यवस्था है, जिसके अंदर खान-पान की व्यवस्था में सुधार, सफाई की व्यवस्था इत्यादि है। रेलवे के अंदर यात्रियों को टिकट का रिफंड लेने में यदि वह यात्रा नहीं कर पाता है, 12 घंटे बाद वह रिफंड प्राप्त कर सकता है। इससे यात्रियों को और सुविधा मिल सकेगी। इसके अलावा इस रेल बजट में महिलाओं का विशेष ध्यान रखा गया है। महिला यात्रियों की चैंकिंग महिला जांच टिकट दल द्वारा किया जाएगा। यदि कोई पुरूष महिला की जांच करता है तो उसको शर्म महसूस होती थी तथा असुरक्षा महसूस होती थी। अब जब महिला दल करेगा तो इससे महिलाओं के प्रति विश्वास है। महिलाओं के साथ-साथ शिक्षित बेराजगार की एक बड़ी समस्या है। शिक्षित बेरोजगार यदि रोजगार के लिए कहीं साक्षात्कार देने जा रहे है, परीक्षा देना जा रहा है तो वह टिकट पर पूरी रियायत ले सकता है। इस देश में कई ऐसे भी शिक्षित बेरोजगार रह जाते हैं तो किरायें के लिए पैसा न होने के कारण साक्षात्कार देने से वंचित रह जाते हैं। उनको सुविधा देने के लिए यह कदम उठाया गया है। माननीय रेल मंत्री जी ने इसके दुख-दर्द को समझा है। इसलिए उन्होंनें शिक्षित बेरोजगार को परीक्षा देने के लिए जाते समय निशुल्क रेल यात्रा की सुविधा दी है।(व्यवधान)....

श्री लित भाई मेहता (गुजरात): माननीय उपसभाघ्यक्ष जी. मुझे फैक्ट की बात करनी है। रेल मंत्री जी ने कल यह कहा कि भारत सरकार या राज्य सरकारों के कई रोजगार के अवसर होंगे, उसके लिए अगर कोई देश का नागरिक जाता है तो उसको निशुल्क सुविधा दी जायेगी। इन्होंने जो तथ्य मरोड़ कर रखा है। यह ठीक नहीं है।

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया): आप सुनिये। यह क्या मरोड़ते हैं, क्या नहीं मरोडते हैं, इनको मरोड़ने दीजिए। जब आपका नम्बर आये तो आप उसको ठीक कर दीजिएगा। अभी बीच मेंहर शब्द को हम लोग ठीक नहीं कर सकते हैं। आप बोलिए।

श्री मूल चन्द मीणा: उपसभाघ्यक्ष महोदय, मूक और बिधर व्यक्तियों के लिए, गूंगे-बहरे व्यक्तियों के लिए इसमें रियायत दी गई है ? हीमोफीलिया रोगी के साथ जों व्यक्ति जाता है उसको भी टिकट में कुछ रियायत दी गई है। इसमें मानवता और मानवीय आधार को देखा जाता है। इसलिए इस बजट का हमें सहर्ष सपोर्ट करनी चाहिए, इसकी बढ़ाई करनी चाहिए। इस देश के गरीब लोगों के अनुसार, गरीब लोगों की भावनाओं के अनुसार यह रेलवे बजट है। इसके लिए लालू प्रसाद जी की प्रशंसा हम सब करें। उनकी प्रशंसा करके हम कोई बुरी बात नहीं करने जा रहे है।

लेकिन समझ में नहीं आता है कि जब गरीब की बात की जाती है, गरीब के बारे में चर्चा की जाती है, शैडयूल्ड कास्ट और शैडयूल्ड ट्राइब्स की बात की जाती है तो इसमें किस बात का एतराज है ?

एक माननीय सदस्य :हमें कोई एतराज़ नहीं है।

श्री मूल चन्द मीणाः यह बहुत अच्छी बात है कि एतराज नहीं है जहां तक नई रेल लाइनें बिछाने की बात हे, सन 2004-2005 के लिए 1650 नई रेल लाइन बिछाने का लक्ष्य निर्घारित किया गया है। आमान परिवर्तन १००० किलोमीटर का लक्ष्य रखा गया है। रेलवे का नया कारखाना कहीं भी लगे. रेलवे के पहिये बनाने का कारखाना कहीं भी लगे. लेकिन इस बजट के अंदरयह व्यवस्था की है, इससे लोगो को रोजगार मिलेगा, रेलों के जो कलपूर्जे हैं, वे इस देश के अंदर बनेंग, अच्छे बनेंगे, नई टैक्नालाजी आयेगी। रेलवे के अंदर हमेशा नई रेल गाड़ियां चलाएं जाती है इस बार भी 18 नई रेल गाडि़या चलाने की बात रेल मंत्री ने कहीं है। रेलवे स्टेशनों के प्लेटफार्म पर जो काम करने वाले हैं, जिन्हें कूली कहा जाता है, जो गरीब तबके के हैं, मध्यम तबके के हैं, उन कुलियों की सुविधा देने की बात रेल मंत्री जीने कही है। कुलियों को परिवार सहित, अपनी पत्नी के साथ यात्रा करने की सह्लियत दी है, वह दूसरे स्टेशन तक यात्रा कर सकता है, उसे पासदेने की बातकही है। कुली लाइसेंस तो ले लेते हैं, लेकिन उनके लिए और ठहरने और बैठने के लिए कोई स्थान नहीं होता है। ऐसी स्थिति कई स्टेशनों पर है। उनके लिए रेल मंत्री जी ने आश्रय स्थल बनाने के लिए पांच करोड़ रूपये की व्यवस्था की है। रेल मंत्री जी ने अपने भाषण में शैडयूल्ड कास्ट्स और शैडयूल्ड ट्राइब्ज़ के आरक्षण की व्यवस्था की है। उसके बेकलॉग को पुरा करने के लिए स्पैशल कैटेगरी में स्पैशल भर्ती की जाए , इस बात की घोषणा उन्होनें अपने बजट में की है। इससे दृष्टिकोण ऐसा लगता है कि पिछड़े और गरीब, दलित और शोषत समाज के प्रति इस सरकार का दुष्टिकोंण क्या है। इससे लोगों में जागृति पैदा होगी कि यह सरकार दलितों,पिछड़ों,गरीबों और महिलाओं के प्रति सद्भावन रखती है, उनको सुविधाएं प्रदान करना चाहती है, उनके अधिकार सरकार के हाथों मेंस्रक्षित है ओर यह सरकार चाहती है कि इस बजट के माध्यम से इन गरीबों को सुविधाएं मिल सकें। मैं रेल मंत्री जी को इस बात के लिए भी धन्यवाद देना चाहता हूं कि आपने शैडयूल्ड कास्ट्स, शैडयुल्ड ट्राइब्ज और ओबीसी के लिए विशेष विज्ञप्ति निकालकार भर्ती करने की बात की है। इससे इन वर्गो में लम्बी समय से जो बैकलॉग चला आ रहा है, उसको पूरा करने की उम्मीद जगेगी । रेल मंत्री जी ने रेलवे मिनिस्टर बनने के तुरंत बाद दो-तीन बातों की घोषणा की थी। आदरणीय पुंज जी भी खादी की बात कह रहें थे। उन्होनें कहा कि रेलवे प्लेटफार्म पर, रेलों के अंदर, रेलवे स्टेशनों पर प्लास्टिक के गिलास और प्लेटे नहीं होनी चाहिए। इसके लिए उन्होनें कुल्हड़ की, मट्टे की बात की है। इस देश के लाखों-करोडों गरीबों की लाखो करोड़ों बेरोजगारों को रोजगार देने की भावना से यह कदम उठाया गया है। इन बातों से दो तरह के फायदे होंगे। प्लास्टिक से पाल्युशन होता है और ऐसा करने पर उससे बचा जा सकेगा। इसके अतिरिक्त कुल्हड में पीने का मजा अलग ही होता है चाहे आप चाय पीओ या मह्ना पीओ या पानी पीओ।

श्री रुद्र नारायण पाणि (उड़ीसा) : पेपर बैग्स भी तो यूज किए जा सकते हैं, जहां तक पर्यावरण का सवाल है।

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया) : जब आपका नम्बर आए, तब आप सजैशन दे दीजिए। मंत्री जी उस पर विचार करेंगे।

श्री मुल चन्द मीणा : इसके अतिरिक्त खादी के पर्दे, खादी की बैड शीट की बात, जो कही गयी है, उससे भी गरीबी को रोजगार प्रदान होगा। खादी कौन बनाता है ? गरीब काम करता है और खादी का उत्पादन करता है। कुल मिलाकर इस बजट की यदि विशेषताओं के बारे में कहा जाए तो इसे गरीब सपोर्ट बजट माना जाना चाहिए। आज हम रेलवे की, विकास के संबंध में,सुविधाओं के संबध में दूसरे देशों से तुलना करना चाहते है। दुसरे देशों की तुलना में हमारी जो जनसंख्या है, इसके ऊपर हमें विशेष ध्यान देना चाहिए क कि जनसंख्या पर नियंत्रण हो । जो हमारे पास रेलवे में साधन है, जितना धन है उन्हीं संसाधनों से इतनी बड़ी जनसंख्या को सुविधाएंदेने में कठिनाई पैदा न हो, इसके लिए एक-दुसरे पर छींटा- कशी करने के बजाए पॉजिटिव काम के लिए लंडना चाहिए और जो सही है, उसके लिए सहीं है, उसके लिए सही कहना चाहिए। इसलिए महोदय, मैं अपनी बात एक अफसोस के साथ खत्म कर रहा हूं कि मुझे विपक्ष के ऊपर अफसोस है। कल गरीबों के सपोर्ट में जो बजट पेश हुआ था, उसका इन्होनें बहिष्कार किया।इन्होनें गरीब के हित की बात को नहीं सोचा और न सुनना चाहा, इस बात का जरूर अफसोस है। महोदय, साथ ही मैं इस रेल बजट का सपोर्ट भी करता हूं ओर रेल मंत्री जी को और सरकार के प्रधानमंत्री जी को इस बात के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं किइन्होनें जो बजट बनाया(व्यवधान)....

श्री एकनाथ के.टाकुर: और सोनिया जी को......

श्री मूल चन्द मीणा : अब मैं क्या कहूं इनको ?

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ादिया) : जब आप प्रोवोक कर रहे हैं जबरदस्ती फिर वे बोलेंगे तो आप कहेंगे कि वे क्यों बोलते है ? अब आप क्यों प्रावोक कर रहे है ?

श्री एकनाथ के. टाकुर: माफ कर दीजिए।

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागड़ोदिया) : अच्छा, आपने माफी मांग ली । मीणा जी छोडिए, उन्होनें माफी मांग ली है आपबोलिए । उन्होनें माफी मांग ली है, खत्म हो गई।

श्री मूल चन्द मीणा: इसलिए मैं देश के प्रधान मंत्री जी को बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहता हूं कि उन्होनें यह बजट, हमारे नेता की आवाज़ को, जनता के बीच में जो चुनाव में कही गई थी, उसको पूरा करने के लिए यह कदम उठाया है, इसी के साथ धन्यवाद।

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: Sir, while welcoming the Railway Budget, I also welcome a latest survey according to which 83 per cent of the population has given a very positive response to this Budget. Now, 83 per cent people means, --"populist". I was asking one of my esteemed

colleague, who has command over language, as to what exactly the dictionary meaning of "populist" because the way it is being used in the YTV channels by some of our opposition parties—not all—as if populist is not a very complimentary term...

SHRI N. JOTHI: Come and survey in Tamil Nadu, you will know the results.

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: Please don't interrupt me. If you start interrupting me, you know that I have ten years of experience. I know how to interrupt and how to stop. So, if you want to engage in that, I don't mind. Offer is open to you. So, I was saying whether the term "populist" is a complimentary term? Should the Budget of an elected Government of this Republic be an elitist one? Some one who knows more about it was telling me that 'populism' is something 'pro-people' or 'people-friendly.' So, I don't think whether it is a compliment which has been made by the Opposition when they say that it is 'populist.' Going beyond that, if you really look at today's Budget, you will exactly know what this document means. Some very disparaging comments were made, not against the hon. Minister. I know there is mania of Laluji. This point is irrelevant here. He can protect himself. भंडारी जी को मैं बता सकता हूं He can protect himself. He has been protecting himself for years together and he would protect himself at some others' cost for years to come. That is not the point. My point is that someone said from here that we should tell the people that it is not safe and secure to travel in train and some insurance should be taken before travelling in a train. That is not the way. Parliament cannot send such a message to the people of this country. The Ministers change. There have been many Ministers. But the Railways, as an institution, will remain as it is for hundreds of years to come. So, let there not be any play between us. Let us not do this mischief at the cost of the people who spend day and night in serving the Railways and serving the country, irrespective of who is governing and what kind of mania is having for whom, for whom you have liking, for whom we have disliking etc. Notwithstanding this, I would say that this type of message should not go from Parliament. The people of this country expect from Parliament, from the Railway Budget, that they will be able to travel safely, with security as well as without spending more from their pockets. Some people may like it. Some people may dislike it because we have a huge population where opinions differ. The poor people do not want that there should be more

burden on their pockets. If someone says, 'No. The conception of the Budget means there must be some hike in the fares.' They should have that much courage to say openly because those who are sitting in the ivory towers of those who are talking about economics and all that in the TV channels can afford to say that. But those who go before the people for votes should not say like this. They have just now faced it.

If they have the courage, then, they should say 'yes'. I think Mr. Shourie is not here. Had he been here, I would have engaged him in that. Yes, you can go and say that this is what you call reform. Reform means you have to increase the burden on the common people. Well, that is not the presumption everyone shares. Let it be explained what it means. What exactly do they mean by 'populist' measures, and what anti-populist measures are required in the Budget? Sir, what is this Budget? Today it is the month of July, and by the time it is finalised, it will be August or September. Hardly six months or six-and-a-half months are left. An interim Budget was placed by the NDA Government in the month of February. It is a continuation of six months and further six months. Assessment is made when the Budget is presented. On the earlier performance, you assess someone, not on assumptions or presumption. And I have a feeling मैं हिन्दी में भी बोलूगां। शायद कुछ ऐसे भी आइडियाज भी हैं,जो हिन्दी में ही बोल सकते है, because the perception is like that and the way some people say things about Shri Lalu Yadavji, I have seen this in TV channels. I have never said these personal things. But apart from everything political, somehow, the feeling is that, 'hey, this fellow यह अंग्रेजी ठीक तरह से नहीं बोल पाता । यह सब बात करेगा these type of things पोर्टर्ज बजट में पोर्टर्ज का क्या काम है? हमारे आंगन में तुम्हारा क्या काम है ? यहां एलिटिस्ट की बात करों, रिफोर्म्स की बात करो, पोर्टर कहा गया ? अनआर्गेजाइज्ड लेबर, ये सब बातें है। ये सब शब्द "कुल्हड़" बजट में होगें A On Kulhars there is a sort of research going on. Sir, everyone knows that in the Rajdhani Express, whenever you travel, Dahi is always served in Kulhars. Nobody ever talked about it. But today, when Shri Lalu Yadayji says this, he had the guts to say that this plastic should be replaced with Kulhars. Chota Shourie started a research on it. I saw it in some newspaper the daybefore-yesterday. कुल्हड़ में क्या-क्या हो सकता है ? What is the chemical reaction? Why has this happened? If some Westerner comes with an idea that this is an anti-pollution measure, and it is the biggest environment-friendly measure, some of us will accept it. हां, वे बोल रहे है I You must now discard plastic. But

if Lalu Yadavji says 'Kulhar' (hen that becomes a laughing matter. But, this is not a laughing matter. People who go for votes in Bihar, they know that for the last 10-15 years. You can laugh away. You can say whatever you have to say. But when you go to the people, you will find that Kulhar is being used. What is the problem? Let us have a discussion on that. This is the idea. What does this Budget mean? What do we find in this Budget? We cannot do assessment because assessment, if it is done, and if it is done by someone for six months or six-and-a-half months, it will be again on the performance of the earlier Ministry. That is what it means. What is this new Budget? It will show the direction, So far as the new Government is concerned, it shows the direction, Sir. The point of assessment has not come. I am sorry to say that some how or the other, the Opposition in its attempt to hop-stop and jump for assessment of the governance of the new Government, is going too far in assessing something, which is there for the last one month. When they are talking about the Railways' performance, yes, on some points we should thank the NDA Government. It is not a question of thanking the NDA Government or this Government. The problems of the Railways have been known. Now, this is a Budget for six months. For six months, the interim Budget was there. This is for the next six months. What direction does this Government give? We are not only welcoming it but we are heartily saying that the direction is that the poor has come on the agenda of the nation. This becomes clear from this Budget. How is it to be done? What is to be done? What performance will it show and what assessment will it be? It will be done after one year. Even after six months, the assessment can be done. As far as this Budget is concerned, it can be said that it is not a one-day match, it is a half-day match. If this Government goes for a five day match, it will be a match for five years. This is a five years' assessment. But, this is only a half-day match. This is not an assessment. ...(Interruptions)...

SHRI N. JOTHI: It may be disrupted due to rain also ... (Interruptions)...

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: You please sit down. ...(Interruptions)... I am not yielding ...(Interruptions)... Sir, please see that these interruptions do not happen. ...(interruptions)... When I am not yielding, you cannot just stand up and say these things. ...(Interruptions)...

SHRI N. JOTHI: I am only saying that ...(Interruptions)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA): I think you are interrupting too much. I request you not to interrupt ...(Interruptions)... Your leader will get a chance. You convey the message to him. ...(Interruptions)... Please don't interrupt ...(Interruptions)...

SHRI N. JOTHI: It can be disrupted due to rain also ...(Interruptions)...

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: I am not yielding ...(Interruptions)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA): When your turn comes up, you talk....(Interruptions)... It does not mean you can interrupt. ...(Interruptions)... Please don't interrupt ...(Interruptions)... You cannot interrupt. ...(Interruptions)... You tell the facts when your turn comes up, not otherwise. ...(Interruptions)...

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: So, that way, if we see at this Budget, I feel that direction which was to be given to this Government through the Common Minimum Programme, that is being given by certain actions, like the social security scheme for the porters, *kulhars, khadi,* etc. So, these are the directions through which within the country our home industries are grown through co-operatives. These directions are very well-meant directions which should be welcomed by all. Sir, first and the foremost point is that there is no hike either in fares or in freights. It should be welcomed by all. This would have saved this country from any inflationary trends in the future to come.

Sir, another point is about recycling of scraps. This is an idea which has been mooted. This is a very good idea. This can be another source of mobilisation of funds for the Railways. Similarly, you take e-mail tendering. One of the major points where cost-cutting can be done in the Railways is in purchase and procurement. So far as the Railway system is concerned, one of the areas of weakness is purchase and procurement. The hon. Minister wants to introduce the e-mail tendering as a pilot project. If there is really a breakthrough in this, I am sure, this can be one mode where the internal cost-cutting measure can be very effective.

Sir, safety and punctuality are the major concerns, so far as the Railway is concerned. As far as the safety of the people travelling in the Railway and the incidents of dacoities in one particular State during this one month are concerned, they are causing a lot of anxiety. This was a problem. You will remember, Sir, two months back when a relative of our

ex-Prime Minister was thrown out of a train, this House had shown a lot of concern on that Definitely, that requires a lot of attention, and there also this recruitment of RPF is in right direction. The steps like recruitment of RPF, strengthening of GRP are in right direction. But I have a point. I would like the hon. Minister to have a detailed inquiry as to how a lot of decoities are taking place in one particular place. In my State also, there was one train dacoity. But how is it that in one particular State, in one particular month, a lot of dacoities had taken place? The Railway Minister is loved by a lot and hated by a few. How is it that in one particular State, 12-15 dacoities are taking place in a month? Dacoities are taking place regularly. I would like to know whether there is something else behind it. You will not understand Hindi. You put it there, "परदे के पीछे कुछ और है क्या ?" So, is there some other effort to malign the Minister who has to be maligned by some people for some reasons or the other? I want a detailed enquiry into it. I want an enquiry in totality, not an enquiry into an individual incident of dacoity like this. ... (Interruptions)...

श्री प्यारेलाल खंडेलवाल (**मध्यप्रदेश**) : दीपांकर जी (व्यवधान)...

श्री दीपांकर मुखर्जी: नहीं, नहीं, आपको यील्ड कर रहा हं, बहुत सीनियर नेता है। मैं देखकर ही बोलता हूं। So, as far as the major point regarding the safety of the ailways is concerned. I would like to say that a Fund with a corpus of Rs. 17,000 crores was created. I will not repeat it. The Railway Minister can repeat. Out of that Fund, an amount of Rs. 3000 and odd crores has been kept for the safety. So far as the Operative Ratio is concerned, I would say that the House would like to recollect that Operative Ratio of the Railways, which is one of the major parameters to look at the operative performance of the Railways, it reached an alarming level of 98.6. Now, this has come down to 92.6. Now, let Mr. Punj or his friends assess whether bringing down the Ratio from 98 to 92 is a credit or discredit. Now, whether it is 98 or 92,1 would not like to guestion that. But the objective has to be that we have to improve that Operating Ratio so that it comes down further there was a time when it was 82 per cent; I think it was in mid 80s or something because then only that Reserve Fund which is created for internal generation of fund to make your own, what you call investment from the Railways for the maintenance of the Railways, so far as the Depreciation Reserve Fund is concerned, I find now that this has if I am wrong, the Railway Minister can correct me reached Rs. 2500 crores. Earlier, it was

Rs. 2200 crores and all that. This is an improvement in this direction so far as the reserve is concerned. A sum of Rs. 2500 crores is there. But so far as the Plan investment is concerned, about Rs. 3000-3500 crores is being planned to tap from the markets. There, probably, foreign institutional investors are also being talked about. So far as I understand, this is something nothing new for resource mobilisation because last year also Rs. 2300 and odd crores was mobilised from the market including 75 million dollars from outside if my figures and yours and the same. But so far as the resource part is concerned, I am finding this is a continuity, but somehow or the other, I was being little confused when the Opposition said, when Mr. Puni said that this is something as if no fund has been assured for the on-going safety schemes. I do not find that. If it is there, that should be clarified. But there is one point, which was in the earlier Budget also, and which is a point of very much anxiety to the Railways. It is regarding the ongoing schemes. It is a fact. For years together. schemes are going on with allocation of Rs. 2 lakhs, Rs. 5 lakhs, this and that. Ultimately, it comes down. It goes on; Ministers may come and Ministers may go. But these projects go on forever. Today it is a fact that Rs. 40,000 crores worth schemes are pending. Now, in these Rs. 40,000 crores worth schemes, there is cost-escalation there is timeescalation. Both are going together, and the earlier Minister had talked about remote area development scheme for Rs. 20,000 crores. Now, I must remind my friends on the other side that at that time also this fund was mooted without a funding, without a sort of confirmed funding, assured funding. This fund of Rs. 20,000 crores was mooted. This was for those schemes. Now what efforts the Government is going to make to have this Rs. 20,000 crores mobilised so that these schemes can be completed within five years? This is one area, I think where more clarification is necessary. I think, there, the hon. Railway Minister is talking about the help, assistance from the Prime Minister and other sources to get this fund. This fund of Rs. 20,000 crores was mooted earlier also and this funding is still blank as it was last time. ...(Interruptions)...

SHRI LALIT BHAI MEHTA: He has not mentioned it in the Budget at all.

SHRI DIPANKAR MUKHERJEE: No, but when he was talking about it, when he was mentioning it he was basically talking about the help from the Prime Minister. I could see what he wants from him because on

other fronts, i.e., non-plan and plan, he does not require any assistance from the Government. Where he requires assistance is in this area, i.e., for remote area development fund which was mooted earlier because that is the only way to remove one of the biggest liabilities of the Railways. I have two points of caution so far as the Railways is concerned. I wish he was there. मैं हिन्दी में ही बोल लेता । Now, one point is, I am very happy to note that efforts are being made to revive Jamalpur unit for production. But I would like to invite his attention to one thing that some of the public sector wagon units, right in Eastern zone including Bengal and Bihar are under-utilised. They are: Bharat Wagon and Engineering Company, Braithewait and Burn Standards. They constitute about 50 per cent wagonmanufacturing capacity of the whole country. Now, they are being underutilised because of lack of orders and because of some other problems which I will mention in the form of a note to the Ministry. It must be seen that these capacities are fully utilised. Then only the idea of reviving Jamalpur unit will really have its results. Because, otherwise, tomorrow Jamalpur unit also will have the same problems as these three units have. So, more wagons are required. We have ordered 18500 units this time. More wagons can be forthcoming provided certain actions are taken on these four unitsk and other wagon-manufacturing units. So. new units should be supplemented to the full capacity utilisations of other units. Same thing goes for Chapra also. When the feasibility study is made, we have to see that the capacity of the Durgapur and Bangalore units is not under-utilised, if the other units come up. With the totality as it, I can only see one point, मुझे हिंदी में यही कहना है कि यह एक बजट है जिसको यदि हिंदी में पढ़ा जाता है तो ज़मीन की खुशबु शहरों में बहुत लोगों को बदबू लगती है। अब जिन को ये बदबू लगती है, उनका परिणाम क्या होगा, यह दो-तीन महीने पहले पता लग चुका है आप इसे populist कहिए या बोलिए कि स्टंटबाजी है या कुछ भी है, लेकिन people को छोडकर कोई नीति नहीं हो सकती। अब पृछा जा रहा है Village on wheels के बारे में किसी ने नहीं पूछा कि "Palace on wheels" क्या है ? जब कंसेशन देते है किसी को,इंडस्ट्रिलस्ट को, तो उसको कंसेशन बोलते है और गरीब को अगर देते हैं तो सबसिडी शब्द है। यह एक दिशा का परिर्वतन मुझे इस बजट में लग रहा हो, लेकिन जिस सुधार से जनता का संपर्क नहीं है, पब्लिक का सुधार नहीं है, उस सुधार से तो बिलकुल फायदा नहीं होने वाला है, because they will have no connection, they will have no tracks.

The time has come when we must learn, if we have not learnt so far—if you want to hide you can hide it—that Shri Lalu Prasad has given such a direction in the budget which forces BJP today to denounce Shri Lalu Prasad but not his budget. Thank You very much.

DR. T. SUBBARAMI REDDY (Andhra Pradesh): Sir, at the outset, I must congratulate our Railway Minister, Shri Lalu Prasad, for having come up with a surprise Railway Budget. If you go back to the history of Railway Budgets presented by Railway Ministers for years, you would find that there has always been an increase in the fares as well as freight rates. For the first time in the history of India, we see that the Railway Minister, Shri Lalu Prasad had the courage, capacity and magic to introduce the budget without increasing any fares and giving psychological satisfaction to the people of India that a budget could be presented without increasing the fares and freight charges. I congratulate him for that. Most importantly, he has taken into account the common minimum programme of the present Government. That programme should be implemented. He has researched a lot and has applied his mind. He has taken lot of pains and has taken into account the extracts of Railway Budgets.

The new priority of development is modernisation of the common minimum programme, modernisation of Railways, replacement and renewal of assets, particularly, track renewal, the safety of passengers, cleanliness, improvement in passenger amenities, control of expenditure—these are the main things. Actually, I don't find much to fight between the Opposition and the Ruling Party. What the people want is perfection and the best results.

This is the Upper House, the Rajya Sabha. Everybody in the country is watching us on the television. बार बार कोई इतना बोले तो ठीक नहीं होता है । We must listen to what everybody says and wants for the Common man. दुख होता है when you go to railway stations and see the trains टोटली गंदा है। Even after so many years, when we find human waste strewed on the tracks, we feel disgusted. We yearn for beautification and a clean atmosphere. It is very bad even from the health point of view. While travelling in the trains we find much discomfort in using the toilets. Now, I am happy that Shri Lalu Prasad has come up with some good ideas. He dreams of giving the best amenities to passengers and wants that utmost cleanliness is maintained. We welcome it. We must encourage it, irrespective of our party affiliations, when he comes forward with a budget like this, because today train journey

is the common man's journey. People who can afford to travel by flights, find that the flights have good amenities and very clean toilets. Shri Lalu Prasad wants the train toilets to be as clean as the aeroplane toilets. We welcome it. We must be really happy.

The first priority should be to see that the common man, in his travel, is not made to spend more money. Secondly, the common man wants happy atmosphere and deserves security and safety. So, he wants to take pain for security and safety. Every Minister in the previous Government used to take pain, I do agree, but, nobody concentrated so much. Here, he has come forward. He wants to spend thousands of crores of rupees for safety; he wants to spend thousands of crores for cleanliness; he wants renewal of tracks and modernisation. All these are welcome measures. So, i am very happy that he has made a job quota for weaker sections. For the first time, he has reserved 25 per cent of the bookstalls in the railway stations for minorities, weaker sections and for the handicapped. It is a very good measure. We welcome it. He said that unemployed youths, who want to go for interview, will be given free tickets. It is also a welcome measure. It is very surprising that he has got all these good ideas. It is very simple. We people think of him— हमने यह सोचा, जो दिल में है वही बोल रहा हूं as a 'mass' man. Making always spontaneous jokes and making us laugh and enjoy, he has proved that he is not only a 'mass' man, but also has the 'mass' mind' by showing as to how the mass can be helped in this democratic country.

Then, I come to reservation. He has provided that a person, who has no reservation, can buy the ticket three days before the date of journey. It is a welcome measure.

Milkmen are struggling to carry their commodity. It is a very small matter. Many may not think it necessary to speak in Parliament about these milkmen. But in real life, lakhs of poor people carry milk from villages to towns to sell their milk. These people are facing transportation problem. The Budget provides that milk will be carried by trains through tankers or by any modern method.

Now, Sir, I come to safety. Safety is a challenge, it is not an easy task. भाषण देना बहुत आसान है लेकिन इंप्लीमेंट करना बहुत मुश्किल है। It is a big task. Unfortunately, for several years and for several times, trains have been meeting with a lot of accidents. He says, यह दुख की बात है। So many people

are losing their life. Though, he has come forward and given the safety and security of passengers the top priority, we want his reply as to how he is going to tackle this problem of accidents. Does he have any concrete plan? How is he going to avoid accidents? Does he have any comprehensive system? Previously, what were the main reasons of accidents? In the present system as the Railway Minister, what new incentives is he going to give? How is he going to achieve full safety and security for the passengers travelling by trains? In spite of announcement and providing fund, how is he going to implement plan for safety and security of passengers?

I am very happy that free passes will be provided to licensed porters and their shelters will be improved by providing funds to the extent of Rs. 5 crores. It is a welcome measure.

Of course, we are a little unhappy so far as new trains are concerned, although the hon. Minister has taken a lot of pain to introduce new trains. I do not want to repeat it; everybody knows how many trains have been introduced and how much budget has been allocated. Andhra Pradesh is one of the most important States and is a connecting State between the South and the North. Surprisingly, the Budget missed to provide greater importance and new trains to Andhra Pradesh. Instead of taking much time, I, along with all Members of Parliament from Andhra Pradesh, would give an exclusive representation to Laluji. I request that he must again re-examine this while giving reply. He must introduce more trains in Andhra Pradesh. I also represent Lord Balaji Temple. Earlier, there was a train between Kakinada and Tirupati, which is stopped now. I request him to restart the train. A number of people from Delhi, Bombay, Kolkata and other important cities in the country want to take blessings of Lord Balaji of Tirupati. So, I call upon him to connect Tirupati temple city with major cities, where thousands of people come - 55,000 people - come from all over the country. So, give an Opportunity to the common poor people to come to the temple by a passenger express train, by connecting Tirupati with all major cities like Delhi, Bombay, Calcutta, Bangalore, etc.

Then, Sir lastly, Railway Minister promised 32 new trains, extension of nine routes and increasing the frequency of service during 2004-05 in his first Railway Budget. Here, my request is that out of these 32 new trains, he can also satisfy Andhra Pradesh and also a few other States

which have lost representation in this list of 32 trains. Besides my supporting the Budget, I would like to request for more trains for Andhra Pradesh, which our friends from the Telugu Desam Party will also support me.

SHRI RAVULA CHANDRA SEKAR REDDY(Andhra Pradesh); You have showered all the praise on Railway Budget, but what your Chief Minister said is contradictory.

DR. T. SUBBARAMI REDDY: I did not understand, Please repeat.

SHRI RAVULA CHANDRA SEKAR REDDY: Your own Chief Minister,

yesterday, issued a statement stating it is a Bihar Railway Budget, not the Indian Railway Budget.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA): You have a chance to speak.

DR. T SUBBARAMI REDDY: Sir let me clarify.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA): Don't get provoked.

DR. T SUBBARAMI REDDY: Sir, he did not understand my English.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA): Okay, let him not understand.

DR. T SUBBARAMI REDDY: Please give me a chance to speak. What I said is that in spite of giving 32 trains, he has missed Andhra Pradesh. I have repeated the same thing which was stated by the Chief Minister. Perhaps, he did not understand. I said arts आंध्र प्रदेश मिस हो गया, इसके लिए सबको सपोर्ट करना चाहिए। Therefore, I did not differ with you... (Interruptions.)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA): He is talking about Andhra Pradesh. He does not represent all the States... (Interruptions). Mr. Subbarami Reddy, please address me. Don't address him.

DR. T. SUBBARAMI REDDY: Sir, my colleague has misunderstood grossly what I said in my communication. Sir, I said even though the Budget is very good, आंध्र प्रदेश मिस हो गया। All parties will definitely support demand for more trains for Andhra Pradesh. Alongwith that, as a citizen of this country, I wanted some more trains for States, where already there is not sufficient number of trains, should be given priority.

Then, Sir, annual plan, which takes care of new projects, will now be Rs. 14,198 crores. He has succeeded in increasing the amount by Rs. 773 crores from the previous Government's Budget. I must also admire that. It is not a small amount. And, also the Minister said that safety and security would be given top priority, which I had already mentioned. The RPF will recruit 8000 men in next two months, which is a welcome measure. Then, measures to check increasing incidents of accidents on unmanned crossings will also be very important. Unfortunately, several times, at several crossings, several accidents take place. It is a small matter, but he has given due importance to it. It is a welcome measure. And, also personnel will be deployed at 19,000 such crossings. That is also very good. Then, Sir, work for providing anti-collusion devices will be undertaken for 1700 kms by North -Eastern Central Railway, for which our friends from North-East should feel happy.

Then, Sir, enhanced outlay on safety includes Rs. 2570 crores for track renewal. Sir, this is the most important aspect because tracks have become very old and unless we renew those tracks, there is always a risk element for the trains. And, I am very happy that the Budget has provided Rs. 2570 crores for the renewal of tracks. There is also an outlay of Rs. 528 crores for rebuilding and replacing of bridges, which is very important. There are a large number of bridges which are in very bad condition. Recently also, a tragedy took place, I think, in Orissa. So, the bridges are very important. I request the Minister to increase the allocation for rebuilding and replacing the bridges.

An outlay of Rs. 813 crores for signalling and telecommunication systems has been granted. Still signals are very outdated and they are leading to accidents. Therefore, I am happy that Rs. 813 crores are provided and here I want the Ministry to give much more priority to this aspect and to see that signalling system is much more modernised and see that maximum security and safety are given to passengers.

So, before giving one suggestion in conclusion, I would like to say that it is a very popular and balanced budget which touches the heart of the common man and not his pocket. It is also a very innovative budget in the right direction, and, for the first time, source of concern for the common man. I am also happy to know that this Budget gives emphasis on IT and application of IT tools for improvement of Railways functioning. Lastly, before concluding, I would like to give two suggestions.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA); Already, you have concluded twice.

DR. T. SUBBARAMIREDDY: Sir, the railway system should be made transparent and a review should be made to identify the loss-making operations. It is very important. The Ministry must see that all loopholes are plugged and there should be transparency. The Ministry should see that no losses are made so that it becomes much more efficient and useful for the people. Only then, the Railways will be in a position to take up the time-bound programme to eliminate loss-making operations. If any subsidies have to be given in railway operation to the weaker sections, it should be made transparent. The measures that the Railway Budget should include are structural reforms, introduction of high-speed trains and freight trains which is the need of the hour. Similarly, there should be a mention of lowering idle assets for commercial exploitation. So, before finishing my Budget speech, I, once again, request Lalu Prasad ji that he must consider the representation that the MPs from Andhra Pradesh are going to give and introduce the required number of trains in Andhra Pradesh and give more happiness to the people of Andhra Pradesh. Thank you.

श्री अबू आसिम आजमी (उत्तर प्रदेश)ः उपसभाध्यक्ष महोदय,आज रेलवे बजट 2004-05 की चर्चा में आपने मुझे जो समय दिया मैं इसके लिए आपका धन्यवाद करता हूं। मैं सबसे पहले तो रेल मंत्री लालू प्रसाद यादव जी को बधाई देता हूं कि बजट में उन्होनें हर क्लास के लोगों का ख्याल रखा है। इसी के साथ मुझे यह चिंता भी है कि कहीं पहलें की तरह से यह मुंगेरी लाल के सपने इस बजट में तो सही नहीं दिखाए गए है क्योंकि खर्च रूपया और आमदनी अठन्नी हैं। जैसे पहले इटावा में एक ओवर ब्रिज का पिछली कांग्रेस की सरकार में थी। जाफर शरीफ ने वायदा किया था और उसको पास किया था। परन्तु आज इतने साल हो गए वह ब्रिज आज तक बना नहीं है। दूसरी एक खास चीज मैं रेल मंत्री जी के ध्यान में लाना चाहता हूं कि वे अपने इस बजट में इसको जरूर शामिल करें। पिछली कांग्रेस की सरकार ने मदरसों में पढ़ने वाले छात्रों कोअन्य पढ़ने वाले दूसरे स्कूलों के छात्रों की तरह कंसेशन दिया था परन्तु जब बी.जे.पी की सरकार आई तो इसने मदरसे के बच्चों से वह कंसेशन छीन लिया। यह एक बहुत नांइसाफी हुई माइनिरिटी के साथ। मैं चाहता हूं कि मंत्री जी अब के इस बजट में इसको शामिल करके मदरसों के बच्चों को कंसेशन दें। रेल मंत्री जी अब के इस बजट में इसको शामिल करके मदरसों के बच्चों को कंसेशन दें। रेल मंत्री जी बजट में जो चीज लाएं है उनको मैं दोहराना नहीं चाहता लेकिन कुछ चीजें ऐसी हैं जो उनके ध्यान में लाकर इसमें शामिल करवाना चाहता हूं। आपके माध्यम से मैं उन्हें बतलाना चाहता हूं कि उर्दू सरकारी जवान शैडयूल्ड नं.8 की एक ज़बान है। आजादी के बाद तमाम रेलवे स्टेशनों

के नाम उर्दू में भी लिखे जाते थे। परन्तु धीरे-धीरे यह उर्दू का चलन स्टैशनों पर गायब होता गया और अब ऐसा हो गया कि बहुत थोड़ी जगहों पर रेलवे स्टेशनों के नाम उर्दू में नजर आते हैं वह अंग्रेजों की जबान जो इस देश में परदेसी बनके आई थी अंग्रेज तो चले गए मगर वह जबान आज इस देश में दुल्हन की तरह से फल-फूल रही है। परन्तु इसी देश की ज़बान उर्दू के साथ एक सौतेलापन हो रहा है। तो मैं चाहता हूं रेल मत्री जी से कि तमाम रेलवे स्टेशनों पर हिन्दी के साथ-साथ और ज़बान के साथ-साथ उसकी छोटी बहन उर्दू का नाम भी पूरे भारतवर्षे में लिखवाने की प्रथा पुनः शुरू कराएं।

मुम्बई देश के 50 माइनारिटी जनपदों में से एक जिला है,जहां 25 प्रतिशत लोग उर्दू बोलते है ओर उर्दू पढ़ते हैं । वहां 50 लाख लोग रोजाना लोकल ट्रेनो में सफर करते हैं । मैं मंत्री जी से कहना चाहता हू, उनके ध्यान में लाना चाहता हूं कि वहां उर्दू में लिखवाना बहुत ही अनिवार्य है ।

में एक और दूसरा मुद्दा उनके ध्यान में लाना बहुत जरूरी समझता हूं कि रेलवे एक बहुत बड़ा एम्पायर है, बहुत बड़ी संख्या में लोग, रेलवे में नौकरी करते थे। आजादी के बाद 33 प्रतिशत माइनारिटी के लोग, अकलियत के लोग रेलवे में नौकरी करते थे, परन्तु धीरे-धीरे उनकी संख्या घटती चली आ गई है। आज यह हालत है कि माइनारिटी के दो प्रतिशत लोग रेलवे में नौकरी कर रहे है। मंत्रीजी ने रेल बजट में प्रावधान किया है-दिलतों के लिए, एस.सी., एस, टीज़ के लिए, पिछडों के लिए, माइनारिटीज़ के लिए, लेकिन मंत्री जी इसमें माइनारिटी का कोटा फिक्स कर दें तो जो आज इस देश में माइनारिटी की हालत खराब होती चली जा रही है, उनको रेलवे में लालू जी के माध्यम से कुछ काम मिल सकता है। आज मिनिस्टर ने 15 सूत्रीय प्रोग्राम जो अनाउस किया है, उसमें रेलवे की भर्ती को भी शामिल किया जाये। यह भी मैं उनके ध्यान में लाना चाहता हूं। एक और खास चीज है कि रेलवे की भर्ती के लिए उर्दू अखबारात में इश्तहार नहीं दिये जाते हैं। उर्दू अखबारात में भी इश्तहार उसके प्रतिशत के अनुसार जैसे दूसरे अखबारात में दिये जाते हैं, वे भी देने चाहिए।

मुम्बई इस देश की इकॉनामिक केपिटल है, जहां तकरीबन 50 लाख लोग रोजाना ट्रेंनों में सफर करते हैं। मगर करतीहै, उनके लिए लोकल ट्रेनों में वर्किगं आवर में चढ़ना और उतरना बहुत मुश्किल है, ऐसा लगता है कि कोई जंग करके आ रहे है। बहुत ही ज्यादा क्राइम महराष्ट्र के अंदर बढ़ते जा रहे है। यह बिल्कुल सही है कि ला एंड आर्डर की सिचुएश्न खराब है। औरतों के साथ ट्रेन के डिब्बों में कई रेप कैसेज हुये है। इसलिए मैं यह बात इनके ध्यान में लाना चाहता हूं। मुम्बई एक इकानॉमिक है और यदि वहां इस तरह से लोकल ट्रेनों में सिक्योरिटी का सही बंदोबस्त नहीं होगा तो बहुत ही इकानॉमिक हानि इस देश को पहचेंगी। खासतौर से ट्रेनों में, चाहे फर्स्ट क्लास का डिब्बा हो, चाहे सेकंड क्लास का डिब्बा हो, कोई भी टिकट लेकर उसमें बैठ नहीं सकता है, खड़े होकर ही यात्रा करनी पड़ती है। अगर अपने कपड़ो पर स्त्री करा कर, उन्हें पहन कर जाता हूं तो उसका कपड़ा खराब हो जाता है। कम से कम और कुछ ट्रेनों का बंदोबस्त करना चाहिए। इनकी कैपेसिटी बढ़ानी चाहिए, क्योंकि मुम्बई की ट्रेफिक बहुत ज्यादा होती जा रही है। अगर 20 किलोमीटर का सफर करना है तो कभी-कभी दो घंटे का समय लग जाता है। लोग ट्रेनों के सफर को ज्यादा प्रायोरिटी देते हैं इसलिए लोकल ट्रेनों में सफर की कैपेसिटी बढ़ायी जानी चाहिए।

एक और चीज़ है। कोंकण रेलवे के हादसे को कह दिया गया है कि यह कुदरती हादसा है। कहकर टाला नहीं जा सकता है। मैं कहना चाहता हूं कि कोंकण में रेलवे की सिक्योरिटी के लिए और वहां पर आगे हादसे न हों, एक बहुत सीरियस तौर पर मंत्री जी का कदम बढ़ाना पड़ेगा।

महराष्ट्र के हिंगोली जिले में पूर्णा से अकोला तक पटरी बनाने का काम पिछले कई सालों से अधूरा पड़ा हुआ है। दो साल से काम शुरू हुआ है, सिर्फ दो ब्रिज बने है। इनका करीब सवा दो सौ करोड़ रूपये का बजट है और सिर्फ 20 करोड़ रूपया उसको दिया गया है। एक साल में 20 करोड़ दिया है, तो इस हिसाब से यह कितने साल में पूरा होगा। इसका खर्च सवा दो सौ करोड़ के सथान पर बढ़कर पांच सौ करोड़ का हो जायेगा, यदि इसी तरह से धीरे-धीरे काम होगा। इस पर जल्द से जल्द ध्यान देने की जरूरत है।

मैं मंत्री जी से एक और आग्रह करना चाहता हूं कुछ ट्रेनों के बारे में, जैसे दिल्ली-आजमगढ़ और दिल्ली-मुम्बई के ट्रैफिक को देखते हुए। उत्तर प्रदेश में पूर्वांचल के अंदर बहुत से ऐसे लोग है जो विदेशों में नौकरी करतेहैं और उनके लिए आने-जाने की सुविधाएं सही नहीं है। देहली से आजमगढ़ देहली से मुम्बई की ट्रेनों की तादाद बढ़ायी जानी चाहिए। आजमगढ़ का जो प्लेटफार्म है, उसके बारे में कई लोगों का मेमोरंडम आया हुआ है कि वह प्लेटफार्म बहुत पुराना है, उस प्लेटफार्म का जल्द से जल्द आधुनिकीकरण किया जाये। एक कैफियत ट्रेन आजमगढ़ से जिसका छूटने का समय १ बजे रात का है, यदि यह तीन बजे छूटती है तो देहली आने वाला आदमी सुबह आकर अपना काम कर सकता है। इसलिए उसका समय रात १ बजे के बजाय तीन बजे या एक दो घंटे आगे पीछे कर दिया जाये। देहली से आजमगढ की तरफ जाने वाली ट्रेन का समय रात को 12 बजे का है, उसके बजाय उसका समय १ बजे कर दिया जाये तो इससे बहुत सारे लोगों को सुविधा होगी। यह ट्रेन पुरानी दिल्ली से छोड़ दिया जाए तो ज्यादा अच्छा होगा। इसके अलावा इसमें एसी सेकिंड क्लास का डिब्बा नहीं है, उसे भी लगवाने का काम किया जाए ाद्सरी यह कैफियत ट्रेन रोजाना चार,छ: आठ घंटे लेट चलती है। ट्रेनों में सफर करने

वाले को यह मालूम नहीं होता कि वह गंतव्य स्थान पर कब पहुचेगा। इस प्रकार एक तो सिक्योरिटी का मामला है और दूसरा समय का मामला है। आपने ट्रेनों के फेयर्स पर बहुत ध्यान दिया है, उसमें गरीबों का ध्यान रखा है गरीबों को मदद मिल रही है, यह सब चीजें प्रशंसनीय है। परन्तु उसी के साथ-साथ सिक्योरिटी पर और जो ट्रेने चलतीहै, उस पर भी ध्यान देने की जरूरत है। मुजफ्फरपुर से लिच्छवी ऐक्सप्रेस में एसी फर्स्ट क्लास का डिब्बा नहीं है,उसे लगवाया जाए और तीन दिन तक इसे वाया आजमगढ़ चलाया जाए, यह वहां के लोगों की मांग है। महोदय, ट्रेनों मे सुविधाएं बहुत बढ़ायी गयी है परन्तु सुरक्षा के लिए कोई खास ध्यान रखा गया हो , यह नजर नहीं आया है । ट्रेनों में सुरक्षा पर ध्यान देना बहुत जरूरी है। पूर्वी उत्तर प्रेदश के बहुत सारे प्लेटफार्मी पर पिछले दिनों बहुत सारी शिकायतें मिली कि बहुत सारे लोग जो बेचारे बाहर से रोजी-रोटी कमाकर मुम्बई से और खाड़ी देशों से,गल्फ से आतें हैं, स्टेशन के प्लेटफार्म पर कुछ ग्रुप्स द्वारा उन्हें कुछ नशीली चीजें खिलाकर कई बार लुट लिया जाता है। इसलिए इस ओर ध्यान देना बहुत जरूरी है और जो सिक्योंरिटी के लोग हैं, सिक्योरिटी ऐजेंसीज़ को टाइट करना जरूरी है। महोदय, आज़मगढ़ के प्लेटफार्म को देखकर ऐसा लगता है कि जंगल में कोई स्टेशन है। स्टेशन पर उतरते समय प्लेटफार्म पर आने के लिए जब तक कोई टेबल न रखो, आदमी उत्तर नहीं सकता है। इतना अंतर प्लेटफार्म और गाड़ी के दरवाजें से नीचे उतरने का है। अगर कोई सीनियर सिटिजन है तो उसके लिए उतरना बहुत मुश्क्लि होता है और ट्रेन भी बहुत थोड़े समय के लिए वहां रूकती है। इसलिए इन स्टेशनो का आधुनिकीकरण जल्द से जल्द किया जाना चाहिए।मैं रेल मंत्री जी को धन्यवाद देना चाहता हूं कि पिछले दिनों गुजरात मे जो गोधरा कांड हुआ, उसके लिए रेल मंत्री जी ने बार-बार अनाउंस किया है ओर गोधरा कांड की इंक्वायरी का मामला उठाया है। यह मामला जल्द से जल्द उठाया जाना चाहिए और जो भी लोग इसमे दोषी हों, उनको सजा मिलनी चाहिए ।परन्तु उसी के साथ-साथ पिछले दिनों रेलवे भर्ती के लिए कुछ लोग महाराष्ट्र गए थे। महाराष्ट्र में उनके साथी जिस तरह से सलूक किया गया,वह निंदनीय है। महोदय, 17 हजार लोगों की भर्ती होनी थी जिसके लिए 75 लाख लोगों अप्लाई किया। इस देश के अंदर बेकारी है।जो खलासी की नौकरी की पोस्ट थी, उसके लिए बी.एस.सी, और पी,एच.डी. लोगो ने अप्लाई किया और उसके बाद तीन दिन तक भूखे नौजवान जब मुम्बई में कल्याण पहुचे तो एक राजनैतिक पार्टी ने उसके साथ जिस तरह से द्व्यहार किया , उसे देखकर ऐसा लगा कि वे लोग किसी अन्य देश से आए हए लोग हैं अथवा वे लोग बंगलादेश या पाकिस्तान के शरणार्थी है । इस तरह से इसकी भी इंक्वायरी होनी चाहिए औरजिन लोगो ने यह कदम उठाया, उनके विरूद्ध कठोर कार्यवाही की जानी चाहिए ताकि दोबारा कोई यह काम न करने पाए। इस बजट में अपनी कुछ मांगे रखने के साथ-साथ मैं इस बजट के लिए अपने माननीय मंत्री श्री लालु प्रसाद जी को बहुत –बहुत बधाई देता हूं और इस बजट का सपोर्ट करता हूं।

شرى ابو عاصم اعظمى "اتر يرديش": اب سبها ادهيكش مهودے، آج ریلوے بج^ٹ 2005-2004 کی چرچ^ہ میں آپ نے مجھے جو وقت دیا میں اس کے لئے آپ کا دھنیواد کرتا ہوں- می0 سب سے پہلے تو ریل منتری لالو پرساد جی کو بدھائی دیتا ہوں کہ بجٹ میں ان وں نے اور کلاس کے لوگوں کا خیال رکھا ہے۔ اسی کے ساتھ مجھے یہ چنتا بھی ہے کہ کہیں پہلے کی طرح سے یہ منگیری لال کے سپنے اس بجٹ میں تو نہیں دکھائے گئے میں کیوں کہ خرچ روپی، اور آمدنی اٹھنی ہے جیسے پہلے اٹاوہ میں ایک اووربرج کا پچھلی کانگریس سرکار میں شری جعفر شریف نے وعدہ کیا تھا اور اس کو پاس کیا تھا- لیکن آج اتنے سال ہوگئے وہ برج آج تک نہیں بنا ہے۔ دوسری ایک خاص چیز میں ریل منتری جی کے دھیان میں لانا چاہتا ہوں کہ وہ اپنے اس بجٹ میں اس کو ضرور شامل کریں۔ پچھلی کانگریس کی سرکار نے مدرسوں میں پڑھنے والے طلباء کو دوسرے یڑھنے والے دوسرے اسکولوں کے چھاتروں کی طرح سے کنسیشن دیا تھا۔ لیکن جب بی جے پی کی سرکار آئی تو اس نے مدرسے کے بچے سے وہ کنسیشن چھین لیا- یہ ایک بہت ناانصافی ہوئی مائنارٹی کئے ساتھ۔ میں چاہتا ہوں کہ منتری جی اب کئے اس بجے میں اس کو شامل کر کے مدرسوں کے بچوں کو کنسیشن دوہرانا ن 6 یں چاہتا لیکن کچ 4 چیزی ایسی 6 ی جو ان کے دهیان میں لاکر اس میں شامل کروانا چاہتا ہوں۔ آپ کے مادھیم سے میں ان میں بتانا چاہتا موں کہ اردو سرکاری زبان شیڈول نمبر 8 کی ایک زبان ہے۔ آزادی کے بعد تمام ریلوے اسٹیشنوں کئے نام اردو می بھی لکھے جاتے تھے۔ لیکن دهیرے دهیرے ی اردو کا چلن اسٹیشنوں پر غائب اوتا گیا اور اب ایسا ہو گیا ہے کہ بہت تھوڑی جگہوں پر ریلوے اس شیشنوں کے نام اردو میں نظر آتے ہیں۔ وہ انگریزی کی زبان جو اس دیش می υ پردیسی بن کر آئی ت a ی، انگریز تو چلے گئے مگر وہ زبان آج اس ملک میں دلہن کی طرح سے پھل $\psi^{\mathbf{a}}$ ول رہی ہے لیکن اسی دیش کی زبان اردو کے ساتھ ایک سوتیلاپن ہو رہا ہے۔ تو میں چاہتا ہوں ریل منتری جی سے کہ تمام ریلوے اسٹیشنوں پر ہندی کے ساتھ ساتھ اور زبان کے ساتھ ساتھ اس کی چھوٹی بہن اردو کا نام بھی پورے بھارت ورش میں لکھوانے کا چلن دوبارہ شروع کرائیں-

 3 ببئی ملک کنے 50 مائنارٹی جن پدوں میں سے ایک ضلع ہے، جواں 50 فیصد لوگ اردو بولتے وی اور اردو پڑھتے وہ وہ ال پچاس لاکھ لوگ روزان لوکل ٹرینوں میں سفر کرتے وی میں منتری جی سے کونا چا وی کی ان کنے دھیان میں لانا چا تا ووں کہ وہ ان کو وہ ال اردو میں لکھوانا بوت ضروری ہے۔

میں ایک اور دوسرا مدعا ان کے دھیان میں لانا بہت ضروری سمجھتا ہوں کے ریلوے ایک بہت بڑا ایمپلائر ہے- بہت بڑی تعدار میں لوگ نوکری کرتے ہیں۔ آزادی کے بعد 33 فیصد مائنارٹی کے لوگ، اقلیت کے لوگ ریلوے می نوکری کرتے تھے، لیکن آهسته آهسته ان کی تعداد گھٹتی چلی گئی۔ آج یه حالت ہے که مائنارٹی کے دو فیصد لوگ ریلوے میں نوکری کر رہے ہیں منتری جمی نے ریل بجٹ میں پراؤدھان دیا ہے۔ دلت کے لئےے، ایس سی، ایس ٹی، یچھڑوں کے لئےے، مائنارٹیز کے لئےے، لیکن منتری جی اس میں مائنارٹی کا کوٹہ فکس کر دیں تو جو آج اس دیش میں مائنارٹیز کی حالت خراب ہوتی جا رہی ہے، ان کو ریلوے میں لالوجی کے مادھیم سے کچھ کام مل سکتا ہے، آج منسٹر صاحب نے 15 نکاتی پروگرام جو اناؤنس کیا ہے اس میں ریلوے کی بھرتی کو بھی شامل کیا جائے۔ یہ بھی می ν ان کے دھیان میں لانا چاہتا ہوں۔ ایک اور خاص چیز ہے کہ ریلوے کی بھرتی کے لئے اردو اخبارات میں اشت ارات ن می دئے جاتے میں- اردو اخبارات میں بھی اشتہار اس کے فیصد کے مطابق، جیسے دوسرے اخبارات میں دئے جاتے میں، وہ بھی دینے چاہئیں-

المبئی اس ملک کی اکانامک کیپٹل ہے، جہاں تقریبا 50 لاکھ لوگ روزانہ ٹرینوں میں سفر کرتے ہیں مگر وہاں کرائم بہت بڑھتے جا رہے ہیں اس لئے اس پر دھیان دینا بہت ضروری ہے۔ ٹرینوں میں مہلائی سفر کرتی ہی ان کئے لئے لوکل ٹرینوں میں ورکنگ آورز میں چڑھنا اور اترنا بہت مشکل ہے، ایسا لگتا ہے کہ کوئی جنگ کر کئے آرہے ہیں۔ بہت ہی زیادہ کرائم مہاراشٹر کئے اندر بڑھتے جا رہے ہیں۔ یہ بالکل صحیح ہے کہ لاء این آرڈر کی حالت خراب ہے۔ عورتوں کئے ساتھ ٹرین کئے ٹبوں میں ریپ ہوا ہے اس لئے میں یہ بات ان کئے دھیان میں لانا چاہتا ہوں۔ جمبئی ایک اکانامک کیپٹل ہے اور اگر وہاں اس طرح سے لوکل ٹرینوں میں سیکورٹی کا صحیح بندوبست نہی طرح سے لوکل ٹرینوں میں سیکورٹی کا صحیح بندوبست نہی

خاص طور سے ٹرینوں میں، چاہے فرسٹ کلاس کا ڈبہ ہو، چاہے سیکنڈ کلاس کا ڈبہ ہو، کوئی بھی ٹکٹ لے کر اس میں بیٹہ نہیں شکٹ لے کر اس میں بیٹہ نہیں سکتا ہے، کھڑے ہو کر ہی سفر کرنا پڑتا ہے۔ اگر وہ پریس کراکر کپڑے پہن کر جا رہا ہے تو پورا کا پورا اس کا کپڑا خراب ہو جاتا ہے، کم سے کم اور کچھ ٹرینوں کا بندوبست کرنا چاہیۓ۔ ان کی کیپسٹی بڑھانی چاہئے، کیکیونگہ ممبئی کا ٹریفک بہت زیادہ ہوتا جا رہا ہے۔ اگر 20 کیونگہ ممبئی کا ٹریفک بہت زیادہ ہوتا جا رہا ہے۔ اگر 20 کلو میٹر کا سفر کرنا ہے تو کبھی کہھی دو گھنٹے کا وقت لگ جاتا ہے۔ لوگ ٹرینوں کے سفر کو زیادہ ترجیح دیتے ہیں۔ اس لئے لوکل ٹرینوں میں سفر کی کیپسٹی بڑھائی جانی چاہئے۔

ایک اور چیز ہے۔ کونکن ریلوے کئے حادثہ کو کہہ دیا گیا ہے کہ یہ قدرتی حادثہ ہے۔ اس کو قدرتی حادثہ کہہ کر شالا نہیں جا سکتا ہے۔ میں کہنا چاہتن اور کہ کونکن ریلوے کی سیکورٹی کئے لئے اور وال پر آگے حادثہ ن اور وال پر سیکورٹ طریقے سے منتری جی کو قدم بڑھانا پڑے گا۔

 a° ار اش ح کے منگولی ضلع میں پورنا سے اکولا تک پائری بنانے کا کام پچھلے کئی سالوں سے ادھورا پڑا ہوا ہے دو سال سے کام شروع ہوا ہے صرف دو پل بنے میں اس کا قریب سوا دو سو کروڑ روپے کا بچٹ ہے اور صرف 20 کروڑ روپے کا بچٹ ہے اور صرف 20 کروڑ دیا ہے تو روپی اس کو دیا گیا ہے ایک سال میں 20 کروڑ دیا ہے تو اس حساب سے یہ کتنے سال میں پورا ہوگا۔ اس کا خرچ سوادو سو کروڑ کی جگہ بڑھ کر 500 کروڑ خرچ ہو جائے گا۔ اگر اس طرح سے دھیرے دھیرے کام ہوگا۔ اس پر جلد دھیان دینے کی ضرورت ہے۔

میں منتری جی سے ایک اور درخواست کرنا چاہتا ہوں کچھ ٹرینوں کئے بارے میں، جیسے دہلی۔ اعظم گڑھ اور دہلی۔ شرینوں کئے بارے میں، جیسے دہلی۔ اعظم گڑھ اور دہلی شہبئی کئے ٹریفک کو دیکھتے ہوئے اتر پردیش میں پروانچل کئے اندر بہت سے ایسے لوگ ہی جو ودیشوں میں نوکری کرتے ہیں اور ان کئے لئے آنے جانے کئے سہولتی صحیح نہیں ہیں۔ دہلی سے مخبئی کی ٹرینوں کی تعداد بڑھائی جانی چاہئے۔ اعظم گڑھ کا جو پلیٹ فارم ہے، اس کئے بارے میں کئی لوگوں کا میمورینڈم آیا فارم ہے، اس کئے بارے میں کئی لوگوں کا میمورینڈم آیا جلد سے جلد جدید کاری کی جائے۔ ایک کیفیات ٹرین اعظم گڑھ سے جھوٹنے کا وقت نوبجے رات کا ہے، اگر یہ گڑھ سے جھوٹتی ہے تو دہلی آنے والا آدمی صبح آکر اپنا تین بجے چھوٹتی ہے تو دہلی آنے والا آدمی صبح آکر اپنا کیام کر سکتا ہے۔ اس لئے۔ اس

کا وقت رات نو بجے کے بجائے 3 بجے یا ایک دو گھنٹے آگے پیچھے کر دیا جائے۔ دہلی سے اعظم گڈھ کی طرف جانے والی ٹرین کا وقت رات کو 12 بجے کا ہے اس کے بجائے اس کا وقت 9 بجے کر دیا جائے تو اس سے بہت سارے لوگوں کو سہولت ہوگی- یہ ٹرین پرانی دہلی سے چھوٹتی ہے، اگر اسے نئی دہلی سے چھوڑا جائے تو زیادہ اچھا ہوگا۔ اس کے علاوہ اس میں AC سیکنڈ کلاس کا ڈبہ نہیں ہے اسے بھی لگوانے کا کام کیا جائے- دوسرا یہ کیفیات ٹرین روزانہ 4،6،8 گھنٹے دیر سے چلتی ہے، ٹرین سے سفر کرنے والے لوگوں کو یہ معلوم نہیں ہوتا کہ وہ اپنی منزل پر کب پہنچے گا۔ اس طرح ایک تو سیکور $\mathring{\Box}$ ی کا معاملہ ہے اور دوسرا وقت کا معاملہ ہے آپ نے ٹرینوں کے کرایوں یر بہت دھیان دیا ہے، اس میں غریبوں کا دھیان رکھا ہے، غریبوں کو مدد مل رہی ہے، یہ سب چیزیں خوش آئند ہیں-لیکن اسی کے ساتھ ساتھ سیکورٹی پر اور جو ٹرینی چلتی میں، اس پر بھی توجہ دینے کی ضرورت ہے- مظفرنگر سے لکشوی ایکسپریس میں AC فرسٹ کلاس کا ڈبہ نہیں ہے اسے لگوایا جائے اور تین دن تک اسے وایا اعظم گڈھ چلایا جائے یہ وہاں کئے لوگوں کی مانگ ہے-

م ودے، اعظم گڑھ کے پلیٹ فارم کو دیکھ کر ایسا لگتا ہے کہ جنگل میں کوئی اسٹیشن ہے۔ اسٹیشن پر اترتے وقت پلیٹ فارم پر آنے کے لئے جب تک کوئی ٹیبل نہ رکھو، آدمی اتر ن 6 یں سکتا ہے۔ اتنا فرق پلیٹ فار اور گاڑی کے دروازے سے نیچے اترنے کا ہے اگر کوئی سینئر سٹیزن ہے تو اس کا اترنا ب 6 ت مشکل 6 وتا ہے 6 رین بھی ب 6 ن وقت کے لئے و 6 اس رکتی ہے۔ اس لئے ان اسٹیشنوں کی جدیدکاری جلد سے جلد کی

جانی چاہئے۔ میں ریل منتری جی کو دھنیواد دینا چاہتا ہوں کہ پچھلے دنوں گجرات میں جو گودھرا کانڈ ہوا، اس کے لئے کہ ریل منتری جی نے بار بار اناؤنس کیا ہے اور گودھرا کی انکوائری کا معاملہ اٹھایا ہے یہ معاملہ جلد سے جلد آٹھایا جانا چاہئے اور جو بھی لوگ اس میں قصوروار ہوں انہوں سزا ملنی چاہئے۔ لیکن اسی کے ساتھ ساتھ پچھلے دنوں ریلوے میں بھرتی کے لئے کچھ لوگ مہاراشٹر گئے دنوں ریلوے میں ان کے ساتھ جس طرح سے سلوک کیا گیا گیا وہ شرمناک ہے۔

 $a^{\circ}ecc$ $a^{\circ}ecc$

डा.प्रभा ठाकुर (राजस्थान) : धन्यवाद उपसभाध्यक्ष महोदय, रेल बजट पर जो सदन में चर्चा हो रही है, उस पर अनेक माननीय सदस्य बजट पर अपने विचार रख चुकें हैं अगर रेल बजट के बारे में एक पंक्ति में कहा जाए तो रेल मंत्री जी ने ऐसा बजट प्रस्तुत किया है जिसे"सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय" कहा जा सकता है। यह मैं ही नहीं कह रही हूं बल्कि पूरे देश में यह बताया गया कि इस बजट के लिए जो जनमत संग्रह हुआ, उसमें 85 फीसदी लोगों ने इस बजट की प्रशंसा की और इसे आम जनता के लिए अनुकुल और अच्छा बजट बताया। उस आधार पर मैं यह बात कह रही हूं। मुझे यह कहते हुए और भी प्रसन्ता का अनुभव हो रहा है कि कांग्रेस का एक मूल नारा था, प्रमुख नारा था कि "कांग्रेस का हाथ,आम आदमी के साथ" इस बजट के द्वारा आम आदमी

को जो राहत दी गई है हर प्रकार से,इसे देखते हुए मैं माननीय प्रधान मंत्री जी को भी बधाई देना चाहती हूं कि वह संकल्प पूरा हुआ है और जो यह यू.पी.ऐ. की सरकार चल रही है, उसने उस आम आदमी के साथ होने के वादे को इस रेल बजट में पूरी तरह से निभाया है।

महोदय, इस रेल बजट की जो प्रमुख विषेषताएं हैं, पहले मैं उन पर कुछ कहना चाहूंगी। उसके लिए रेल मंत्री जी भी साधुवाद के पात्र हैं और उनके तमाम सहयोगी भी और वे सब लोग भी साधुवाद के पात्र हैं जिनकी इसके पीछे अगर कही सलाह और सद्भावना रही है जैसा सदन में भी साधुवाद के पात्र हैं जिनकी इसके पीछे अगर कही सलाह और सद्भावना रही है जैसा सदन में अभी हमारे एक माननीय सदस्य कह रहे थे। इस बजट की विषेषताएं ये हैं कि यह किसी एक खास वर्ग को लुभाने वाला नहीं हैं बल्कि आम वर्ग, गरीब वर्ग के लोगों को ध्यान में रखकर इस बजट को बनाया गया है। इस बजट के द्वारा मजदूरों को, ग्रामीण जनता को रोजगार मिलने के साथ ही गरीबों के लिए, पिछड़ों के लिए, समाज के जो कमज़ोर वर्ग हैं – एस.सी.और एस.टी. के, चाहे पिछड़े वर्गों से जुड़े हुए लोग हैं, उन्हें इस बजट में विशेष रियायतें देकर रेल मंत्री जी ने यह प्रमाणित किया है कि वे स्वंय भी ज़मीन से जुड़े हुए व्यक्ति हैं।

महोदय, रेल बजट केवल मनमोहक ही नहीं हैं बल्कि व्यावहारिक भी है ।भारतीय रेल का एक दीर्घ कालीन गौरवशाली इतिहास रहा हैं इस देश में और आज भी इस देश में जो अधिंकाश जनता हैं, वह जब दूरगामी यात्रा करती है तो रेल पर ही निर्भर करती है । रेल इस देश में सम्पर्क का एक सबसे बड़ा दूरगामी यात्रा करती है तो रेल पर ही निर्भर करती है । रेल इस देश में सम्पर्क का एक सबसे बड़ा और सशक्त माध्यम रहा है और इसके विकास का एक लंबा इतिहास रहा है । आम आदमी इसमे सफर करता हैं , इसलिए बहुत जरूरी है क्योंकि आम आदमी की तादाद इसमे सफर करते वक्त अधिक होती है, इसलिए उनकी सुविधाओं का पूरा ध्यान रखा जाए और वह ध्यान, मुझे खुशी है कि इस बजट में रखा गया है ।

महोदय, इस रेल बजट में पांरपरिकता ओर आधुनिकता का एक अच्छा सामंजस्य दिखाई देता है। पारंपरिकता की बात करें तो जो एक पहले से, खास करके ग्रामीण क्षेत्रों में जो प्रचलित रहा है कुल्हड़ों का प्रयोग, मिटटी के कुल्हड़ का प्रयोग, यदि प्लास्टिक के पात्र प्रयोग में लिए जाते हैं तो वे पर्यावरण के लिए भी ठीक नहीं माने गए है उनके स्थान पर मिट्टीके कुल्हड़ का उपयोग अच्छा है। स्वास्थ्य के अलावा इससे कई ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को रोजगार मिलेग, इस नाते भी एक अच्छी शुरूआत की है। खादी और हाथ से बने हुए कपड़ो का उपयोग रेल के पर्दों में या सीट के कवर आदि में किया जाना, इससे भी ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को रोजगार मिलेगा और यह एक अच्छी शुरूआत है। इस प्रकार रेल मंत्री जी ने स्वेदशी को कही-बढ़ावा दिया है। स्वदेशी रोजगार जिसे कहते है, जो बुनकर वर्ग हे उनका ध्यान रखा है। कई लोग स्वदेशी की सिर्फ बातें करते रह गए लेकिन मुझे प्रसन्नता है कि इस बजट में वाकई स्वेदशी के लिए सोचा गया और उस बात को अमल मे लाते हुए, खादी के प्रयोग और हथकरघा द्वारा बनाए गए कपड़ें के प्रयोग की बात इसमें की गई है।

आधुनिकता के सांमजस्य को देखा जाए तो कंप्यूटरीकरण और कंप्यूटर पर आधारित ट्रैफिक कंट्रोल सिस्टम, जो कि सुरक्षा के लिए एक बहुत ही जरूरी चीज है, रेल यात्रियों की सुरक्षा के लिए बहुत ही आवश्यक है तथा साथ ही कंप्यूटर आनंलाइन टेंडर की प्रणाली-इसके भी बड़े अच्छे दूरगामी नतीजे आएंगे। इससे भ्रष्टाचार कम होने के अलावा जो कुछ माफिया के लोग, जो अब तक अपनी आंतकवादी गतिविधियों से कई लोगों को टेंडर नहीं भरने देते थे. उससे भी निजात मिलेगी, मुक्ति मिलेगी- यह भी एक अच्छा कदम है।

इस बजट में जो स्वागत योग्य कदम हैं इसके अलावा जो कुछ चितांए हो सकती है जो कोई किमयां हो सकती है और जो सुझाव हो सकते हैं, वे सभी मैं क्रमशः प्रस्तुत करूंगी। यात्रियों की सुविधा एक बहुत ही जरूरी चीज हैं, लेकिन इसमें साधुवाद की बात यह है कि यात्रियों के किराए और मालभाड़े में तो वृद्धि नहीं की है लेकिन यात्रियों को दी गई रियायेतों और सुविधाओं में वृद्धि की है। इसलिए मैं रेल मंत्री जी से यही कहना चाहूंगी किआपने जो ये सुनहरे वायदे किए हैं और जो आम आदमी को ये सुनहरी तस्वीर दिखाई है, इनको पूरा करने के लिए ठोस कदम उठाने की आवश्यकता होगी ताकि इस बजट में वाकई जैसा कहा है वैसा ही बजट बनकर के इसकी क्रियान्विती हो, यह केवल ड्रीम बजट बनकर न रह जाए।

विभिन्न सुविधाओं के लिए जो 215 करोड़ का खर्च रखा गया है, यह बहुत आवश्यक है। वैसे हमारे साथियों ने यहां पर विभिन्न आंकडे दे दिएं है। इसलिए मैं और ज्यादा आंकडो पर बात नहीं करूंगा। लेकिन यात्रियों को बेहतर खान-पान की सुविधाओं के लिए, साफ-सफाई की सुविधा के लिए, द्वितीय श्रेणी मे अनारक्षित प्रणाली की सुविधा के लिए और यात्रियों को रिजर्वेशन सिस्टम के लिए,74 और नए स्थानों के विस्तार के लिए तथा इन सारी घोषणाओं के लिए निश्चित रूप से रेलमंत्री जी साधुवाद के पात्र हैं। अगर हम यह कहें कि यह बजट आर्थिक दृष्टि से व्यावहारिक है क्योंकि रेलवे के राजस्व में वृद्धि के लिए यात्री किराए और मालभाड़े में तो वृद्धि नहीं कि गई है। लेकिन यह सोचा गया है कि यात्रियों की संख्या में और माल ढुलाई में वृद्धि हो, रेलवे के आर्थिक विकास के लिए यह एक अच्छी और सकारात्मक सोच है। अब तक जो रेलवे का स्क्रैप बाहर जा रहा था उसको फिर से ही-साइकल करके उपयोग करने की जो बात कही गई है यह एक स्वागत योग्य कदम है।

इसी प्रकार अब रेल मंत्री जी ने छपरा में नई पहियों इकाई के निर्माण्र की बात कही है और उसके साथ ही यह भी कहा है कि वही पर रा-मेटरियल भी मिलता है। यदि देखा जाए तो बिहार अपने आप में एक पिछडा प्रदेश तो है ही साथ ही एक गरीब प्रदेश भी है। उसमें क्या बुराईहै? .बल्कि यह एक स्वागत योग्य कदम हैं कि आम जनता को रेल मंत्री जी ने जो इतनी रियायतें दी हैं अगर छपरा में बिहार के श्रमिकों को भी काम मिले ओर वहां पर उचित लागत में पहियों का निर्माण हो तो यह भी एक स्वागत योग्य बात है। इसमें कोई आलोचना की बात दिखाई नहीं देती है। इससे

वहां के ग्रामीण, गरीब पिछड़े लोगो और कमजोर वर्ग के लोगों को रोजगार मिलेगा। इसलिए इसका स्वागत किया जाना चाहिए और मैं इसका स्वागत करती हूं।

रोजगार की दृष्टि से भी यह रेल बजट बहुत ही उपयुक्त है। इस रेल बजट में रेल मंत्री जी ने हजारों लोगों को रोजगार देने की बात कही है और एक बहुत ही अच्छी बात यह कही है कि केन्द्रीय नौकरियों में साक्षात्कार के लिए जो बेराजगार जाएंगे उनको किराए में पूरी छूट मिलेगी। इसका भी मैं स्वागत करती हूं। नई नौकरियों में पिछडों के लिए ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों के लिए, एससी,एससीटी के लोगों के लिए और समाज के दलित और कमजोर लोगों के लिए हजारों की तादाद में उन्हें नौकरी के नए अवसर मिलेंगे। इस बात की भी मैं प्रशंसा करती हूं।

मानवीय दृष्टिकोण की सराहना करते हुए इस रेल बजट में जो मानवीय पक्ष रखा गया है, उसकी सबको सराहना करनी चाहिए क्योंकि रोगियों को रियायत देने के लिए हीमोफीलिया के पेंशेट्स को ए.सी. रियायत और उन सैनिकों का विधवाओं को रियायत जो अभी आतंकवादी हमले कामुकाबले करते हुए शहीद हुए है, यह एक मानवीय दृष्टिकोण रेल मंत्री जी दिखाना है ओर साथ ही संवेदनशीलता भी दिखाई है। पिछड़ो, कमजोर वर्गो, वृद्धो विकलांगों मूक, बिधर लोगों और महिलाओं को भी संरक्षण दिया है, उनके हितों का ध्यान में रखा है। इसके लिए भी रेल मंत्री जी बधाई के पात्र हैं। शायद ऐसा पहली बार हुआ है। जो श्रमिक वर्ग है, प्लेटफार्म पर जो कूली सामान ढोतें ह, उनके लिए तथा उनके परिवार के लिए, उनकी पत्नी के लिए, यदि वह अगर अपने कार्य स्थल से कहीं तक जाते है तो उन्हें यात्रा के लिए एक मुफ्त पास मिलेगा।

रेल मंत्री जी ने यह बहुत ही अच्छी मानवीय संवेदनशीलता दिखाई है। संवेदनशीलता यह दिखाई है कि कुलियों के रैन बसेरे के लिए, उन्हें विश्राम स्थली के लिए कोई उचित स्थान चाहिए, इसके लिए उन्होंने पांच करोड़ की निधि का आवंटन किया है। यह भी एक स्वागत योग्य कदम है। इससे उन्होंने सामाजिक न्याय की दृष्टि का एक संदेश दिया है। रेलवे प्लेटफार्म पर व्हीलर बुक्सटाल्स की जो मोनोपोली थी, उस मोनोपोली की जगह अब इसमें अनेक स्थानों पर कमजोर वर्ग के लोगों को कुछ स्टाल लगाने को अवसर मिलेगा। इस प्रकार उन्हें रोजगार मिलेगा, अनेक बेरोजगार लोगों को इसके जिरए रोजगार मिलेगा, यह भी एक स्वागत योग्य कदम है। महिलाओं को टी.सी.के रूप में,टिकट चैकर के रूप में नौकरियां मिलनाऔर उनकी सुरक्षा के इंतजाम भी एक स्वागत योग्य कदम है।

अभी तक तो पहले केवल पैलेस आनं व्हील्स था, जिसमें समाज का केवल एक खास वर्ग ही यात्रा कर सकता था, उसकी दरें ही इतनी थी लेकिन अब विलेज आनं व्हील्स की परिकल्पना, इस संदर्भ में एक बहुत ही नई और संवेदनशील शुरूआत है। यह बात सोचना कि अगर इस देश की आम जनता किसी धामिर्क स्थल या ऐतिहासिक स्थल पर जाना चाहती है तो उन्हें रियायती दरों पर.

स्लीपर की गाड़ी की इस तरह की सुविधा मिलना ताकि वे ऐसी जगहों पर जाकर, इस प्रकार से भारत दर्शन रियायती दरों पर कर सकें, सराहनीय है।

कम खर्च और सुविधाजनक यात्राएं हों, इसमें भारतीय रेल का कोइ सानी नहीं है लेकिन पिछले कुछ अरसे से ट्रेनों की बढ़ती हुई दुर्घटनाएं या हिसंक वारदातों, लूटपाट की घटनाओं से कहीं अवश्य ही एक चिंताजनक स्थिति बनी है और इस कारण पिछले वर्ष यात्रियों की संख्या में भी कमी आई हैं, जोकि एक चिंता की वजह है। इस पर रेल मंत्री जी को विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है। हालांकि रेल मंत्री जी ने सुरक्षा के इंतजाम के तहत कई बातें और कई घोषणाएं की है जिसमेंकि आधुनिक सिग्नल प्रणाली, प्लेटफार्मी को उंचा करना, रेल पथों का नवीनीकरण, कम्प्यूटर आधारित ट्रैफिक कंट्रोल सिस्टम, इंटर लाकिंग प्रणाली, अतिरिक्त स्रक्षाकर्मियों की तैनाती, रेलवे क्रासिंगस पर अतिरिक्त चौकीदारों की नियुक्तियों, पुराने पुलों का जीणोद्वार करना या जैसाकि पहले एक बार कहा था कि रेलवे ट्रैक पर रेल का कोई इंजन इस तरह चलेगा, जो कि देखता चले कि आगे कहीं कोई बाधा तो नहीं है, इस मामले में और भी जितनी कठोर कार्यवाही हो, और सुरक्षा के लिए कठोर कदम उठांए जाएं, उपाय किए जाएं। ये बहुत आवश्यक है क्योंकि सुरक्षा का उपाय प्राथमिक है। यात्रियों की जान-माल की सुरक्षा हो, इसको प्राथमिकता से सुरक्षित करना बहुत आवश्यक है, क्योंकि पिछले कुछ अरसे से ऐसा होने लगा है कि रेल चले जब छुक-छुक, करें कलेजा धुक-धुक। लोगों की यह धुकधुकी, यह डर, यह चिंता बंद होनी चाहिए ताकि ज्यादा से ज्यादा से यात्री इन सुविधाओं का लाभ उठा सकें। किराए में जो वृद्धि नहीं हुई है, उसका भी लाभ उठा सकेंऔर अधिक से अधिक लोग निश्चित होकर पुरी सुरक्षा और सुविधा के साथ रेल में यात्रा कर सके। इसके लिए सुरक्षा की श्रेंणी में समूह "घ" में जो हजारों की तादाद में अभी तक रिक्तियां हैं, उनकों प्राथमिकता से पूरा करना महत्वपूर्ण रहेगा।

मैं यह कहना चाहूंगी की माननीय मंत्री जी ने अनेक रेलों की घोषणा की लेकिन राजस्थान में रेलों के मामले में हमेशा की तरह अकाल सा ही रहा । राजस्थान एक ऐसा प्रदेश है जहां पर्यटन की असीमित संभावानाएं है। वहां बहुत लोग है, जाना चाहते हैं।

राजस्थान में अजमेर एक ऐसा स्थान है जो दो महान तीर्थ स्थलों की संगम स्थली है। जहां तीर्थराज पुष्कर के लिए पूरे विश्व से तीर्थ यात्री आते हैं जहां, विश्व प्रसिद्ध गरीब नवाज ख्वाजा साहब की दरगाह भी है, जहां विश्व भर से जायरीन आते हैं। मैं माननीय रेल मंत्री जी से आग्रह करना चाहूंगी कि वे अजमेर पर विशेष ध्यान दें। आज अजमेर में यह स्थिति हो गई है कि मीटर गेज में जमाने में वहां आज से अधिक रेले चला करती थी। अजमेर राजस्थान के हृदय में स्थित हैं, राजस्थान के मध्य में स्थित है इसलिए भी उसका एक ऐतिहासिक और भौगोलिक महत्व है।

इस बारे में मैंने पहले भी निवेदन किया है कि आज फिर कहना चाहती हूं कि पुजा एक्प्रेस

जो जयपूर से जम्मू तवी जाती है जिसमें अनेको तीर्थ-यात्री वैष्णों देवी के दर्शन के लिए जात हैं, यह अधिक व्यावहारिक होगा कि वह अजमेर से आरंभ हो क्योंकि जयपूर से अजमेर का फासला केवल सवा सौ किलोमीटर है। तब यह एक पूजा के स्थान से दूसरे पूजा के स्थान तक जाएगी। यहां गरीब नवाज साहब की दरगाह है ओर वहां माता वैष्णो देवी का मंदिर हैं। इस से पूरे देश में एकता और सद्भावना का सदेश जाएगा। इसलिए यह ट्रेन अजमेर से चले क्योंकि यह खाली सवा सौ किलोमीटर का फासला है। अभी होता यह है कि कई लोग समय पर जयपुर नहीं पहुच पाते और उस ट्रेन को नहीं पकड़ पाते। इस व्यवस्था से खाली अजमेर ही नहीं बल्कि अजमेर के आसपास के 10 जिलों के लोगों को भी लाभ मिलेगा।

महोदय,अभी रेल मंत्री जी ने सुधार और रियायतें देने की बात कही है, मैं उन से कहना चाहूंगी कि यह सुनिश्चित करें कि इन रियायतों, सुधारों और सुविधाओं का लाम आम आदमी तक जरूर पहुच पाए। ऐसा न हो कि सरकारी कार्यशैली के भंवर में फंसकर आम आदमी को इन सुविधाओं का लाभ न मिल सकें। आप न हमले में मारे गए सैनिकों की विधवाओं को या इंटरव्यू के लिए जाने वाले नौजावानों को किराए में छूट देने की बात कही है, इस के संबंध में कुछ ऐसी प्रकिया अपनायी जाए और उसका इस तरह से सरलीकरण हों कि उन्हें बार-बार चक्कर न काटने पड़े। इसलिए जरूरी हे कि घोषणाएं करने के साथ ही मंत्री जी देखें कि उस पर कार्यवाही कैसे सुनिश्चित हो। महोदय, हमारे रेल मंत्री जी स्वंय भी जमीन से जुड़े हुए व्यक्ति है, आम आदमी से जुड़े हुए व्यक्ति है और काफी अनुभवी भी है और मुझे पूरा विश्वास है कि वह इस बात पर अवश्य गौर करेंगे।

महोदय, ट्रेनों का समयबद्ध चलना बहुत जरूरी है। आप जानते है कि कई बार यात्री एक ट्रेन से जातेहैं ओर उन्हें आगे दूसरी ट्रेन पकड़नी होती है। अब अगर वह ट्रेन समय पर नहीं आई तो यात्री उसके लिए कई घंटो तक परेशान होते है। और उन के आगे के सारे आरक्षण धरे रह जाते हैं। इसलिए समय की पांबदी या ट्रेने समय की दृष्टि से जो कुछ भी व्यवस्थांए इस बजट के माध्यम से की गयी है, उस के संबंध मे मैं कहना चाहूंगी कि प्लेटफार्मा और ट्रेन का लेवल बराबरी पर होना चाहिए। अभी कई जगह गैप रह जाता है जिस से बुजुर्गो, महिलाओं और बच्चों के लिए उतरना मुश्किल हो जाता है। उन के पांव कई बार गैपमे फंस जाते हैं। इसलिए इस कठिनाई की ओर देखना बहुत जरूरी है। महोदय, एक सुझाव और देना चाहूंगी कि सीनियर सिटीजंस या 60 साल से ऊपर की बर्थ पर चढ़ना बहुत मुश्किल हो जाता है। इसलिए हमारे बुजुर्गों के लिए हमे ऐसी व्यवस्था जरूर करनी चाहिए कि 60 वर्ष स ऊपर के लोगो को नीचे की ही बर्थ आवंटित की जाए। दूसरे ट्रेन में जो लोगों को रेल नीर मिलता है, वह उचित और सस्ती दर पर मिले, प्लेटफार्म पर स्वच्छ पेयजल की समुचित व्यवस्था हो और देखा जाय कि वाकयी में उसकी उपलब्धता हो। महोदय, मैं रेलवे की परियोजना को दो श्रेणियों में

बांटने का सुझाव देती हूं। एक तो वे जोिक लंबे समय से लंबित परियोजनाएं है और दूसरी वे जोिक अविलंबनीय लोग महत्व की योजनाएं है जिन्हें कि प्राथमिकता के आधार पर पूरा किया जाना चाहिए।

महोदय, मैंने अखबार में पढ़ा कि विपक्ष के लोग यह कहते हैं कि यह बजट स्वादहीन है, रंगहीन हैं और गंधहीन है तो इतना मैं ही कहूंगी कि वे यह बात आत आदमी से पूछें। इस देश का हर गरीब और आम आदमी यह कह रहा हैं कि ,ऐसा आया है रेल बजट कि हर आदमी कर रहा है फील गुड़। धन्यवाद।

उपसभाध्यक्ष (श्री संतोष बागडोदिया) : धन्यवाद । श्री पी.जी. नारायण ।

[VICE-CHAIRMAN (SHRI BALAWANT alias Bal APTE) in the chair]

SHRI P.G. NARAYANAN (TAMIL NADU): Mr. Vice Chairman, Sir first of all, I submit that the first Railway Budget of this new Government is totally disappointing. Sir, it doesn't even have a vision of development of Indian Railways in the next five years. Indian Railways, which serves as a basic infrastructure for the movement of passenger and freight has to be strengthened considerably. But this Budget doesn't reveal any plan for its proper development. The investment plan for 2004-05 is totally unimpressive. This leads us to believe that most promises will not actually be kept.

Sir, the main feature in this Budget seems to be announcement without any proper funding. Sir, the Budget, according to me, is like an election eve Budget by not touching the passenger and freight services. I understand the problems of this Government in presenting a comprehensive Budget since they have been in office for hardly two months. The Railway Minister will do well in curbing dacoity in trains passing through Bihar. While the elections to Bihar Assembly round the corner, he should concentrate his energies in tackling dacoity in rains passing through the State. It looks like the Railway Board and the Railway Ministry belong to Bihar. Since Independence, the Railway Ministers of the country have come from the State for over 30 years. We had L.N. Mishra, Kedar Pandey, Jagjivan Ram, Ram Vilas Paswan, Nitish Kumar and now Lalu Prasad. It looks as though the Indian Railways belong to Bihar and Bihar is the Indian Railways. For example, a State like Tamil Nadu never had a full-fledged Central Cabinet Minsiter handling railways ever since independence.

Sir, no wonder the Railway Minister himself has acknowledged in this Budget speech that Tamil Nadu is one of the neglected States so far as development of Railways is concerned. The railways in Tamil Nadu is very backward and has nearly 75 per cent of the tracks in meter gauge. The State has the highest concentration of meter gauge in the whole of India. The entire railway track from Chennai to Kanyakumari has a single track. As far as the railway system is concerned, Tamil Nadu lives in the 18th Century. From an analysis of the fund allocation for gauge conversion projecs shows that the amount allocated in the current Budget on this account is very, very meagre. At this rate of fund flow from Railways, it will take another century to complete the ongoing gauge conversion projects in Tamil Nadu.

So, Sir, the casual attitude of the Minister towards the doubling project is seen, when he sanctioned hardly Rs. 3 crores for doubling of Madurai to Tindukal section which is hardly 2 per cent of the single railway line connecting Madras Egmore to Kanyakumari. This project would take 15 years to complete at this current rate of fund flow. It will take two centuries to complete the entire doubling projects from Chennai to Kanyakumari. We now talk in terms of linking Kashmir to Kanyakumari for national integration. Is this the way to allocate funds for such crucial project? Even the hometown of the President of India, Dr. Abdul Kalam, Rameshwaram, has received a raw deal from Lalu Prasad Yadav's Budget. He has hardly sanctioned Rs. 25 crores for the project while the total cost of the Madurai to Rameshwaram gauge conversion project is Rs. 343 crores. But in this Budget, only Rs. 25 crores is sanctioned. Sir, I, therefore, would demand a special fund be earmarked for completion of gauge conversion projects in Tamil Nadu considering the fact that over 80 per cent of the railway lines in the State is meter gauge.

The Railways are promoting the coach factory at Kapurthala at the cost of Integral Coach Factory, Perambur in Tamil Nadu. While 50 years old Integral Coach Factory is languishing for want of funds now. All modernisation projects of coach building are being sanctioned for Kapurthala factory only. I condemn this step-motherly treatment being given to the Integral Coach Factory in Tamil Nadu.

Another area where the State is lagging behind is the Metropolitan Railway Project. While the underground railway project in Delhi has built 80 to 90 kms. of track in the last six years, the Metropolitan Railway

System in Chennai has taken 35 years to complete 17 kms. of railway track. So, Chennai city is totally neglected. The MRTS Phase-II at Chennai has been badly delayed by the Railways. The Railway Minister has already indicated that it will be completed by April, 2005. At least now, the Railways should keep up the schedule on this long delayed project. I am very sorry to say that there is no mention at all of the Chennai Pondicherry rail link via Mamallapuram. There is no indication of the Chennai-Egmore-Chennai Central rail link. Nor is there any mention of the early completion of the Cuddalore-Vridhachalam-Salem broad gauge line. Sir, like MRTS in Chennai, the Railways should take similar projects in Coimbatore, Trichy, Madurai and Tirunetveli. A survey for new railway line from Satyamanglam to Samraj Nagar had been completed ten years ago but the Railway Ministry is not keen in taking up this very important project which is pending for the last several years. So, I appeal to the Railway Minister to take up this project in the current year itself.

Finally, overall the Railway Budget reveals a lack of vision and no plans for the healthy development of Railways. Thank you, Sir.

श्री रिव शंकर प्रसाद: आदरणीय उपसभाध्यक्ष जी, रेल बजट पर बोलने के लिए आपने मुझे अवसर दिया, इसके लिए मैं आपके प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूं।

उपसभाध्यक्ष जी, मनमोहन सिंह जी की सरकार का यह पहला आर्थिक दस्तावेज़ है। कल से मैं अखबार और टेलीविज़न को देख रहा हूं तो दो बातें दिखाई पड़ रही है। "रेल मंत्री, माननीय लालू प्रसाद जी की रेल चली" ये टिप्पणियों टेलीविज़न में भी आ रही है, अखबारों में भी आ रही है। आदणीय लाल प्रसाद जी की रेल चलना अभी बाकी है, क्योंकि उनकी गाड़ी 24 जून से चली और पिछले एक महीने के अंदर इसने कितना सफर किया, यह तो देखना पड़ेगा लेकिन मैं एक बात के लिए उनका साधुवाद करना चाहुंगा। जब मैं इस बजट भाषण को पढ़ रहा था तो इसमें दो बातें लगती है, इस बजट भाषण के दो व्यक्तित्व हैं और गंभीर राजनीतिक विरोध के बावजुद आदरणीय लालु प्रसाद जी ने इस बात को स्वीकारा है कि अभी तो यू.पी.ए. और लालू प्रसाद जी की रेल चली है, लेकिन एन.डी.ए. और नीतिश कुमार जी की रेल ने अच्छा काम किया है, अच्छी चली है ।उन्होने स्वंय इस बात को स्वीकारा है, मैं उसको क्वोट करके सदन का समय नहीं लेना चाहता लेकिन जो रिव्य परफॉरेमंस की चर्चा विस्तार से है, उसमें तीन बातों का उल्लेख है- फ्रेट मुवमेंट अपने टारगेट से आगे बढ़ा पैसेंजर मुवमेंट अपने टारगेट से आगे बढ़ा, रेलवे की बचत अच्छी हुई और सुरक्षा के मामलों में जो सबसे महत्वपूर्ण बात है, उन्होंनें कहा कि वर्ष 2000-2001 dh rgyuk esa the number of accidents has come down drastically in the year 2003-2004.

आदरणीय उपसभाध्यक्ष महोदय,यह बात महत्वपूर्ण विषय है कि फ्रेट मूवमेंट के विषय में, राजस्व के विषय में, सुरक्षा के विषय में तीनो मामलों में आदरणीय रेल मंत्री माननीय लालू प्रसाद जी ने नीतिश जी की रेल को अपना आभार दिया है और यह इस कारण से हो सका कि हमने पिछले 5 वर्षों में एक बहुत मजबूत आर्थिक व्यवस्था इस देश में दी है।

श्री मूल चन्द मीणा : गए दिनों की बात छोड़िए, अब नयी बात करिए।

श्री रिव शंकर प्रसाद: आप जरा शांति से सुनिए(व्यवधान)...मीणा जी, जरा कभी सुना करिए। आज 8.2 परसेंट का ग्रोथ रेट सभी स्वीकारतें हैं। 2003-2004 का इकनॉमिक सर्वे कहता है कि 'The buoyant economy ultimately created a strong foundation for a good Budget'. यह मैं बताना चाहता हूं।

श्री मूल चंद मीणा : आज यहां चर्चा रेल बजट पर हो रही है या पुराने बजट पर हो रही है ?

श्री रिव शंकर प्रसाद: मीणा जी, लगता है कि आपने अपना रेल बजट नहीं पढ़ा है। यह आपके रेल मंत्री ने कहा है। जरा पढ़ा करिए, जरा होमवर्क किया कीजिए ...(व्यवधान)...उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं यील्ड नहीं कर रहा हूं, I am not yielding. (Interruptions) I am not yielding.

उपसभाघ्यक्ष (श्री बलवंत उर्फ बाल आपटे) : आप इंटरप्ट मत करिए ... (व्यवधान)...

श्री संजय निरुपम(महराष्ट्र) : ये बोल रहे है कि इनकी ट्रेन लालू जी की ट्रेन से टकराई नहीं, साथ-साथ चल रही है।

श्री रिव शंकर प्रसाद: अभी तो लालू जी की रेल चलनी शुरू हुई है, आगे देखना है। उन्होंने कई बातें कही है। एक-दो आंकड़े मैं अवश्य आपके सामने रखना चाहूंगा। मैं कह रहा था कि उनका जो व्यय है वहा1,265 करोड़ रूपए है और जो नॉन-प्लान एक्सपेंडिचर है, वह र41,417 करोड़ रूपए है। अब विकास तो प्लान एक्सपेंडिचर से होता है। अब नॉन-प्लान और प्लान एक्सपेंडिचर में कितना अंतर है, यह आप देख लें, यह आपके सामने है। दोनों का योग करने पर 52,080 करोड़ रूपए आता है। आपकी रेलवे की रिसीट्स कितनी है? आपके पास जो इतना बड़ा ह्यूज गैप है, उसे आप कैसे पूरा करेंगे? सिर्फ एक शब्दावली आपके पास है कि हमें बजट सपोर्ट मिलेगा। पिछले वर्ष का बजट सपोर्ट था लगभग 7,000 करोड़ रूपए,इस बार क्या उससे ज्यादा मिलेगा।

एक और बड़ा सवाल है, जो सवाल दीपांकर बाबू ने भी उठाया है कि 246 ऑन-गोइंग प्रोजेक्ट्स हैं, जिनके लिए 46,000 करोड़ रूपए की आवश्यकता है। यह पैसा कहां से आएगा। दूर रेल संपर्क योजना में 20,000 करोड़ रूपए का प्रावधान नीतिश जी ने किया था लेकिन इस बार के बजट भाषण में there is not even a whisper about that.

एक और सवाल उठता है कि 72 नए सर्वे की चर्चा रेलवे बजट में हुई है। रेलवे बजट को देखता हूं तो पिछले बजटों में सर्वे की चर्चा नहीं होती थी, नयी लाइनों की चर्चा होती थी। यह शायद पहली बार है कि किन-किन लाइनों का वह सर्वे कराएंगे, उनको नया बनाने के लिए या उसकी डबलिंग के लिए, उसकी चर्चा इस रेल बजट में की गई है। मैंने जानने की कोशिश की कि अब तक कितने सर्वे हुए हैं और उन पर कितना खर्च होगा। यदि पिछले 10-15 वर्षों का हिसाब हम लगाएं तो करीब डेढ़ लाख रूपया चाहिए उन प्रस्तावों के लिए जिनके सर्वे हो चुका है। यह तो ये जो 72 नए सर्वे जोड़े गए हैं, इनका क्या होगा?

महोदय, दीपांकर बाबू ने एक सवाल किया था पापुजिल्म का, क्या मतलब है इसका? मैं उनका बड़ा सम्मान करता हूं, मैं उनको विद्धता और उनकी प्रतिमा का बड़ा सम्मान करता हूं उन्होनं पापुलिस्ट शब्द का प्रयोग किया था क्योंकि कल एक टेलीविजन चैनल पर हम दोनों साथ थे। शायद उसका संदर्भ मुझसे ही था। पापुलिज्म का मतलब क्या होता है ? दो शब्द हैं-प्रो-पीपूल एंड ईमानदारी से होने का जरूरत है, लेकिन प्रो-पीपुल एक बात है, पापुलिस्ट होना दूसरी बात है और पापुलिस्ट होने का मतलब होता है दिखावे के लिए प्रो-पीपल होकर काम करते हैं तो आप योजना लेकर आतें हैं, उसके लिए पैसे का प्रावधान करते हैं, उसके लिए समयबद्ध कार्यक्रम में क्रियान्वयन की बात करते हैं। इसे कहते है प्रो-पीपूल । दूसरा होता है दिखावे के लिए कुछ बोलना । बिहार शासन लालू जी के हाथ में पिछले 12-14 वर्षो से हैं। कभी प्रत्यक्ष रूप से हैं,कभी अप्रत्यक्ष रूप से है। बिहार एकमात्र ऐसा मुख्य राज्य है जहां दो मुख्यमंत्री है- वैधानिक और वास्वतिक लेकिन चलता है। परन्तु जिस प्रकार से पिछले 10-15 वर्षों में बिहार का शासन चला, क्या रेलवे का शासन भी वैसा ही चलेगा ? एक सवाल मैं पूछना चाहता हूं । याद है एक समय माननीय रेल मंत्री जी एक बहुत अच्छा प्रस्ताव लेकर आए थे और आज मैं उनका सम्मान करता हं उस प्रस्ताव के लिए। मैं भी उनसे प्रभावित हुआ था। भैंस चराने वालों, बकरी पालने वालों, सुअर पालने वालों पढ़ना लिखना सीखों और उन्होंनें चरवाहा विद्यालय बनाया था । उनकी यह बहुत अच्छी योजना थी । हांलाकि मैं उनका गंभीर राजनीतिक विरोधी हुं लेकिन "चरवाहा स्कूल" के प्रस्ताव का मैंनें भी समर्थन किया था। आज वह स्कूल किस हालत में हैं, क्या कभी देखा है ? 14 वर्षों में न कोई शिक्षक, न कोई बिल्डिंग और न कोई पढने वाले छात्र, मात्र एक घोषणा की गई और वह चलता रहा। तब क्या जो इतनी बड़ी घोषणांए की गई है, वे भी इसी प्रकार से चलती रहेंगी ? यह एक बहुत बड़ा सवाल है। इसीलिए हम कहते हैं कि जब आप जनता के पक्ष में होकर सोचते हैं, प्रो-पीपुल

होना एक बात है, पापुलिस्ट होना दूसरी बात है। यह फर्क बहुत साफ है। आदरणीय उपसभाध्यक्ष जी, एक सवाल और उठता है। इस देश में रोटी को बांटने की पॉलिटिक्स बहुत चली है। रोटी कैसे बंटेगी? रोटी ऐस बंटनी चाहिए। लेंकिन रोटी की संख्या बढ़े यह पॉलिटिक्स आज तक नहीं हुई है और यह समझना पड़ेगा कि अगर देश को तरक्की करना है तो रोटी की संख्या बढ़ानी पड़गी। रोटी जब बढ़ेगी तो बांटने में कमजोरी नहीं आएगी। रोटी की तादाद कम होगी तो बांटने की लड़ाई अधिक चलेगी। Therefore, I always say that economic growth without social justice is not possible....:

श्री विजय सिंह यादव(बिहार) : अगर रेल बजट आपको अच्छा लगा हो तो उस पर भी बालिए।

श्री रिव शंकर प्रसाद : हम दूसरी बात बोल रहे हैं, आप जरा शांत रहिए। ...(व्यवधान)....विजय जी, हम वही बोल रहें हैं। शायद थोड़ा ऊपर बोल रहें हैं(व्यवधान)...

लेकिन सामाजिक न्याय के लिए आर्थिक विकास जरूरी है और आर्थिक विकास के लिए इंवेस्टमेंट जरूरी है, उसके लिए रेवेन्यू आवश्यक है। इस पूरी दिशा का, आदरणीय दीपांकर बाबु ने जो बात की थी, उस दिशा का इस बजट में पुरा अभाव है। आदरणीय उपसभाघ्यक्ष जी, मैं जब से इस पूरे बजट को सुन रहा हूं तब से एक बात साफ दिखाई पड़ रही है कि सुरक्षा जरूरी है और यह सभी ने कहा है लेकिन क्या हुआ ? लालू जी ने 24 मई को रेल मंत्री का पद भार ग्रहण किया । उसके बाद क्या स्थिति हुई ? आदरणीय उपसभाध्यक्षजी, मैं कुछ अखबारों को देख रहा था "जनसत्ता" 5 जन,2004 ट्रेन डकैती से पसीना छूटा लालू का । यह आपके सामने है । यह मैं हिन्दुस्तान देख रहा हं....(व्यवधान) मैं "हिन्दुस्तान" अखबार प्रस्तृत कर रहा हूं । लालु को ट्रेन डकैतों की ललकार । आदरणीय उपसभाध्यक्ष जी, यह रोज की कहानी है मैं उस पर नहीं जाना चाहता लेकिन में तीन घटनाओं का जिक्र अवश्य करूंगा। 25 मई मालदा-भिवानी एक्सप्रेस, आरा-बस्तर के बीच में आए हमलावर, लूटमार की, बॉर्डर सैक्योरिटी फोर्स के इंस्पेक्टर बलवंत सिंह, जो मालदा इलेविन बटालियन का था, उसने रोकने की कोशिश की तो उसको मार डाला । क्या लालू प्रसाद जी ने आज तक बलंवत सिंह की विधवा से मुलाकात की ? एक सवाल मैं पूछना चाहता हूं 12 जून का पटना-पूरी एक्प्रेस ट्रेन में डकैती होती है , 3जून को दुन एक्सप्रेस में एक पैंसेजर इन्द्र बहादुर सिंह की हत्या होती है और एक दर्जन घायल होते हैं। यह सवाल कहा गया कि लालू जी के होते हुए ही इतनी डकैती की संख्या क्यों बढ़ गई ? यह बहुत गंभीर सवाल है।...(व्यवधान)

डा. कुमकुम राय : क्या पिछली सरकार के समय ट्रेन डकैती की घटनांए नहीं हाती थी ? ...(**व्यवधान**) ...

श्री रिव शंकर प्रसाद: आदरणीय उपसभाध्यक्ष जी, मुझे बोलने दिया जाये।

...(व्यवधान)... मुझे बोलने दिया जाये । मुझे बोलने दिया जाये । ...(व्यवधान)... एक मिनट, एक मिनट । मुझे बोलने दिया जाये । ...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री बलवंत उर्फ बाल आपटे) : आरजेंडी के नाम है । ...(व्यवधान)... बहस में भाग लेने के लिए आपके नाम है। उस समय आप उत्तर दीजिए । ...(व्यवधान)... डा. कुमकुम जी, आपको भी अवसर मिलेगा। ...(व्यवधान)... आपको भी अवसर मिलेगा। ...(व्यवधान)... बीच में टोकने की जरूरत नहीं है। उनको भाषण पूरा करने दीजिए। ...(व्यवधान)... श्री रिव शंकर जी, आप शुरू करिए। ...(व्यवधान)...

श्री रिव शंकर प्रसाद : हो गया, हो गया । ...(व्यवधान)... उपसभाध्यक्ष जी, मैं इसलिए कह रहा हूं कि यह इतना गंभीर वाकया था और आदरणीय रेल मंत्री लालू प्रसाद के दो घंटे के वक्तव्य में रेल के अंदर बढ़ते हुए अपराध पर एक शब्द नहीं है । ...(व्यवधान)... यह बहुत गंभीर मामला है।...(व्यवधान)...

डा. कुमकुम रायः उपसभाध्यक्ष जी, ...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री बलवंत उर्फ बाल आपटे): आप क्यों बीच में बोल रही है? ...(व्यवधान)...वह तो भाषण पर बोल रहे हैं।...(व्यवधान)... आप बीच में क्यों बोल रही है? ...(व्यवधान)... आप भाषण करो।...(व्यवधान)... आप बाद में बोल सकते हैं।...(व्यवधान)... आपको इंटरप्ट की जरूरत नहीं है।...(व्यवधान)... आपको भी मालूम है।...(व्यवधान)...

रवि शंकर प्रसाद : उपसभाध्यक्ष जी, मुझे आपका संरक्षण चाहिए । ...(व्यवधान)... मुझे अपनी बात बोलने दी जाये।...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री बलवंत उर्फ बाल आपटे) : हो गया, हो गया कुमकुम जी, आपको बोलने का अवसर मिलेगा।...(व्यवधान)... वे बजट पर ही बोल रहे हैं। आप ठीक से सुनिये। ...(व्यवधान)... बात बजट की ही है। संभव है आपकी उस पर सहमति न हो, लेकिन बात बजट की ही चल रही है।...(व्यवधान)... आप बैठिये। आप उनको भाषण पूरा करने दीजिए।...(व्यवधान)... उनको भाषण पूरा करने दीजिए।...(व्यवधान)...

प्रो. राम देव भंडारी: रवि जी, हम उम्मीद करते हैं कि आप अच्छी बातें बोलेंगे। आप यह क्या कह रहे हैं ? ...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री बलवंत उर्फ बाल आपटे): कुमकुम जी, हो गया । ...(व्यवधान)...

श्री रिव शंकर प्रसाद: आदरणीय उपसभाध्यक्ष जी, ...(व्यवधान)...यह बात में इसलिए कह रहा था कि सुरक्षा राजनीति से इतर होनी चाहिए। रेलवे में हम भी चलते हैं, सभी

चलते हैं। आज यह बहुत पीड़ा का विषय है कि इतने लंबें भाषण में 24 जूने के बाद रेलवे में बढ़ते हुए अपराध और उसकी रोकथाम की कोई चर्चा नहीं है। जीआरपी राज्य सरकार के अन्तर्गत होती है, रेलवे प्रोटेक्शन फोर्स की एक सीमा होती है। बिहार में किसका शासन है, पुलिस किसके अन्तर्गत है, यह बताने की आवश्यकता नहीं है। अभी एकजगह मैंने देखा ...(व्यवधान)...

डा. कुमकुम रायः उपसभाध्यक्ष महोदय, ...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री बलवंत उर्फ बाल आपटे) : आप बीच में क्यों बोल रहें है ? ...(व्यवधान)...नहीं, नहीं, यह ठीक नहीं है । ...(व्यवधान)... कुमकुम जी, यह ठीक नहीं हैं। ...(व्यवधान)...यह बिल्कुल ठीक नहीं है । ...(व्यवधान)...

श्री रिव शंकर प्रसाद : आदरणीय सभापति जी, मैं बात कह रहा था कि यह गभीर विषय है। एक जगह देखा बिहार की आदरणीय मुख्यमंत्री जी का स्टेटमंट देखा कि इसको कैसे रोका जाये ? एक जगह देखा आदरणीय लालू प्रसाद जी का वक्तव्य कि विश्वकर्मा भगवान की पूजा की जाये। क्या सुरक्षा विश्वकर्मा भगवान की पूजा तले चलेगी ? यह गंभीर सवाल है। मैं बहुत सीधा सवाल पूछना चाहता हूं, I want to put a question to the hon. Minister of State for Railways, who is present here. My guery is this. In the light of these spat of fresh accidents, did the hon. Railway Minister call a meeting of the Bihar Chief Minister, Bihar Senior Police Officers and officers of the adjoining areas of West Bengal, Jharkhand and Uttar Pradesh to come with a time- bound strategy to contain it? इसका कोई स्वर नहीं दिखाई पड़ता। इसलिए मैं कहता हूं कि क्या संकेत जा रहा है। वे अपराध इसलिए कर रहें हैं कि उनके दिमाग में एक बात आई कि जिस तरह से बिहार की सरकार चल रही है, जिस तरह से बिहार का प्रशासन चल रहा है...। हमारे खिलाफ कार्यवाही नहीं होगी। अगर यह संकेत दुर्भाग्यपूर्ण है, इसको रोकने की आवश्यकता है। ...(व्यवधान)... में बहतप्रों. राम देव भंडारी : बिहार की जनता आपको पहचानती है। उन्होनें आपको रिजेक्ट कर दिया है।...(व्यवधान)... बिहार की जनता ने आपको रिजेक्ट कर दिया है।...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री बलवंत उर्फ बाल आपटे) : आप बीच में क्यों बोल रहे हैं ? ...(व्यवधान)... यह बिल्कुल ठीक नहीं है।

प्रो. राम देव भंडारी : कहां से कहां चले गए, यह दिखाई नहीं दे रहा है । ...(व्यवधान)...

श्री रुद्र नारायण पाणि : आपको भी रिजेक्ट कर चुके है । ...(व्यवधान)... उपसभाध्यक्ष महोदय, इनको भी कई बार रिजेक्ट कर चुके हैं । ...(व्यवधान)... लोक सभा चुनाव में आपको भी कई बार रिजेक्ट कर चुके हैं । ...(व्यवधान)...

प्रो. राम देव भंडारी: कैसे रिजेक्ट किया आप लोगों को । जनता के बीच में जाइये और वहां कुछ काम कीजिए।...(व्यवधान)... मिश्र जी, उनको कहिए कि जनता के बीच में जाएं।

उपसभाध्यक्ष (श्री बलवंत उर्फ बाल आपटे) : राम देव जी हो गया, ...(व्यवधान)... आपकी बात हो गयी है । आपको जो कहना था, कह चुके हैं । अब उनका भाषण होने दो ।

श्री रिव शंकर प्रसाद: आदरणीय महोदय, राम देव भंडारी जी विद्वान व्यक्ति हैं। मैं उनका बहुत सम्मान करता हूं। राजनैतिक विरोध अपनी जगह होगा, लेकिन मेरा व्यक्तिगत सम्मान उनके लिए बहुत है। आज उन्होंने एक बहुत बड़ी बात कह दी है कि काम किरए और वोट पाइए। क्या वे बिहार में काम करके वोट पा रहें हैं? यह एक बड़ा सवाल है। इसकी चर्चा हम कभी और करेंगें।(व्यवधान)...

डा. कुमकुम रायः जनता ने आपको रिजेक्ट कर दिया है....(व्यवधान)...

श्री रिव शंकर प्रसाद: आदरणीय उपसभाध्यक्ष महोदय, एक बात सामने आयी है कि रेलवे प्रोटेक्शन फोर्स की नियुक्ति की प्रक्रिया को बदला गया है। मुझे इसके बारे में दो बातें कहनी है। यह प्रक्रिया पहले रेलवे के पदाधिकारियों के पास थी। My question to you, Mr. Minister of State, is this: Is it not a fact that because of large-scale irregularities committed by the officers of the Railway Protection Force, this job of recruitment was given to the Railway Recruitment Board? And] if that was the procedure emanating because of irregularity, why has the process been restored again? आदरणीय उपसभाध्यक्ष महोदय, 90 के दशक में बिहार में बड़ी संख्या में दारोगा के पद पर नियुक्ति हुई थी। मामला हाईकोर्ट में आया। हाई कोर्ट ने स्टिक्चर पास कर दिया। काफी जमकर मामले की जांच की गयी। बहुत लोगों की शारिरिक बनावट उसके लायक नहीं पाई गयी। स्ट्रिक्चर पास हुए। अनुभव ताता है कि नियुक्ति की प्रक्रिया में पारदर्शिता जरूरी है क्योंकि आदरणीय रेलवे मंत्री ने अपने भाषण में पारदर्शिता की बात कही है। यह रेलवे की बात है।

श्री मंगनी लाल मंडल : बिहार में दरोगा की नियुक्ति में जितनी पारदर्शिता बरती गयी थी, अब तक नहीं बरती गयी है।

श्री रिव शंकर प्रसाद: अब फिर मुझे जजमेंट लेकर आना पड़ेगा। क्या स्ट्रिक्चर हुआ था, मुझे जजमेंट लेकर आना पड़ेगा। आप नए-नए हैं, अभी छोड़ दीजिए।

श्री मंगनी लाल मंडल : आपकी पीड़ा यही है।....(व्यवधान)... बेटा दारोगा क्यों बन गया। यह पीड़ा अभी तक आप झेल रहे हैं। इस दम्भ से कभी तो उभरिएगा।....(व्यवधान)... लालू जी से....बड़ी पिटाई खाइएगा जनता के द्वारा....(व्यवधान)... श्री रिव शंकर प्रसादः महोदय, ये कैसे शब्द का प्रयोग कर रहे हैं ?(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री बलवंत उर्फ बाल आपटे) : यह ठीक नहीं है।

श्री रिव शंकर प्रसाद : इसे एक्सपंज किया जाए(व्यवधान)...

श्री अजय मारू (झारखंड) : इस तरह की भाषा का प्रयोग क्यों कर रहे है ?

उपसभाध्यक्ष : श्री बनबेज एर्फ बाल आपटे यह ठीक नहीं है। बिल्कुल ठीक नहीं है।(व्यवधान)... रामदेव जी, आप भी बैठिए। इनका भाषण पूरा होने दीजिए।(व्यवधान)... बाकी सब लोग बैठिए। राम देवजी, आप भी बैठिए।(व्यवधान)...

प्रो. राम देव भंडारी जनता....जनता के द्वारा कहा गया है, लालू जी के द्वारा नहीं कहा गया है।(व्यवधान)...

श्री रुद्र नारायाण ...लोक सभा चुनाव में आप कितनी बार हारे।(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री बलवंत उर्फ बाल आपटे) : बस हो गया ।(व्यवधान)... आप लोग बैठिए । उनका भाषण पूरा होने दो ।(व्यवधान)... छोड़ो,छोड़ो । अरे भाई, रवि शंकर जी का भाषण है....(व्यवधान)...

श्री रिव शंकर प्रसाद: मंडल जी हमारे मित्र है। बिहार से आए हैं, अच्छे वक्ता भी हैं। लगता है अति उत्साह में बोल गए होंगे। अपनी बात को वापस ले लेंगे। कोई बड़ी बात नहीं हैं।

श्री राजीव शुक्न (उत्तर प्रदेश) : महोदय, मैं थोड़ा देर से आया । मुझे समझ नहीं आ रहा कि रेल बजट पर बहस हो रही है या बिहार पर बहस हो रही है ।

उपसभाध्यक्ष (श्री बलवंत उर्फ बाल आपटे) : आप थोड़ा समय सुन लेंगे तो समझ में आएगा । थोड़ा सुन तो लीजिए तब समझ में आएगा ।

श्री रिव शंकर प्रसाद: आदरणीय उपसभाध्यक्ष जी, मुझे मालूम है कि रेल के बजट में राजनीति होती है। कुल्हड़ से किसी को विरोध नहीं है। स्वंय कहा गया कि जार्ज फर्नायन्डीज ने इंट्रोडयूज किया था – राजधानी में, बाकी ट्रेनों में खानें में कुल्हड़ में दही आया करता था। कुल्हड़ आना चाहिए, खादी आनी चाहिए, कुल्हड़ की राजनीति नहीं होनी चाहिए- सवाल इसका है और इसीलिए मैं एक बात पूछता हूं अगर लालू प्रसाद जी ने हमारे प्रदेश बिहार के लिए संदेश देने की कोशिश की है तो मैं उसका स्वागत करता हूं। एक नेक सवाल और पूछता हूं कि दस हजार करोड़ रूपए से अधिक की जो योजनाएं एन.डी.ए.की सरकार के द्वारा बिहार के लिए दी गई थी, उसके बारेमें कभी गंभीरता दिखाई गई है? नवीनगर, एन. टी. पी. सी. पावर प्लांट एक हजार मेगावॉट का- उसके लिए फंड का क्या प्रावधान हो रहा है? गंगा नदी पर पटना में ब्रिज, मुंगेर में रेल पर ब्रिज

और कोसी पर रेल ब्रिज का प्रावधान है- इसके लिए पैसों के आंवटन में कोई बढ़ोतरी की गई है क्या ? ये बड़े गंभीर सवाल है।

अतं में उपसभाध्यक्ष जी, मुझे इस पूरे मामले को एक और गंभीरता से कहना है। हम लोग राजनीति में है तो विरोध तो होगा।....(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (श्री बलवंत उर्फ बाल आपटे): रेल बजट की बात चल रही है, उन्होंनें रेलवे ब्रिज की बात की है...रेलवे ब्रिज की बात की है।

श्री मुलचन्द मीणा : गंगा पर तो ब्रिज बनना ही चाहिए।

श्री रिव शंकर प्रसाद: आदरणीय उपसभाध्यक्ष जी,छपरा में रेलवे के पिहए का कारखाना रहना चाहिए लेकिन कारखानें के लिए बिजली की भी जरूरत होती है। बिजली भी आनी चाहिए, यह भी समझने की जरूरत है।(व्यवधान)...

प्रो. राम देव भंडारी : आप चिंता मत कीजिए । आप चिंता मत कीजिए । पांच साल आप आराम कीजिए ।

उपसभाध्यक्ष (श्री बलवंत उर्फ बाल आपटे): नहीं, हर व्यक्ति का एक काम होता है उनका काम प्रश्न पूछने का है।(व्यवधान)... राम देव जी, उनका काम प्रश्न पूछने का है, उत्तर देने का काम रेल मंत्री जी का है, आपका नहीं है। वे अपना काम करेंगे। ये प्रश्न पूछनें का काम कर रहे हैं, उनको अपना काम करने दीजिए उनको उत्तर देने का काम आपका नहीं है। आपके रेल मंत्री उनको उत्तर देंगे(व्यवधान)...

प्रो. राम देव भंडारी: एकाएक पावर से चले गए हैं तो उसकी दवा तो मेरे पास नहीं हैं. उसकी दवा तो जनता करेगी।

उपसभाध्यक्ष (श्री बलवंत उर्फ बात आपटे) : रेल मंत्री उनको उत्तर देंगे । आपके रेल मंत्री समर्थ हैं, वे उत्तर देंगे ।(व्यवधान)...

श्री राजूपरमार: रवि शंकर जी, आपकी पीड़ा हम समझते है, आप अभी पावर में नहीं हैं।

उपसभाध्यक्ष (श्री बलवंत उर्फ बाल आपटे) : सबको उत्तर देने की जरूरत नहीं है। किसी को भी उत्तर देने की जरूरत नहीं है।

प्रो. राम देव भंडारी: देखिए, वे मेर मित्र हैं। वे अंग्रेजी भी अच्छी बोलते हैं, हिन्दी भी अच्छी बोलते हैं, भाषण भी अच्छा करते हैं मगर अभी बहुत पीड़ित हैं।

उपसभाध्यक्ष (श्री बलवंत उर्फ बाल आपटे) : ठीक है।

श्री रिव शंकर प्रसाद : कोई पीड़ा नहीं है, चिंता मत किरए। उपसभाध्यक्ष जी, मेरा अंत में आग्रह यही है कि घोषणाएं करने का अधिकार सत्ता दल को है। सत्ता से हम भी रहेंगें, आप भी रहेंगें। काई भी आता रहेगा। आज वे हैं, कल यहां आएंगें, परसों हम वहां जाएंगें-यह प्रक्रिया है लोकतंत्र की लेकिन(व्यवधान)...

प्रो. राम देव भंडारी: यही बात तो समझनें की है। इसी बात को तो समझना है।

श्री रिव शंकर प्रसाद: लेकिन अभी आप कांग्रेस में नए-नए हैं, थोड़ा शांत रहिए आप। मेरा आपसे कहना है आदरणीय उपसभाध्यक्ष जी कि हम जब घोषणांए करते हैं तो जनता हमें अपनी घोषणाएं की मर्यादाओं पर कसती भी है और मुझे एक सबसे बड़ी पीड़ा यह है कि इस पूरी बजट स्पीच में इन घोषणाओं को टाइम बाउंड रूप से क्रियान्वित करने का कोई स्वरूप नहीं दिखाई पड़ता। अतः इसकी दिशा भटकाव की दिशा है। अभी मैं इरादे की बात नहीं करता, मैं दिशा की बात करता हूं। इसलिए आदरणीय रेल मंत्री जी से मैं जरूर आग्रह करूंगा कि उन्होंने जो इतनी घोषणांए की है, जो जनता के हित में करने की कोशिश की है, इसका कालबद्ध, समयबद्ध कार्यक्रम किया है और इसके पैसे की उपलब्धता क्या है, इस पर अवश्य सदन को बताने की कृपा करेंगे। उपसभाध्यक्ष जी, आपने समय दिया, इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

उपसभाध्यक्ष (श्री बलवंत उर्फ बाल आपटे) : पांच बजने में एक-डेढ़ मिनट है। राम मोहन राव जी आपका भाषण तो नहीं हो पाएगा, समय चाहिए आपको, इसलिए अभी हम चर्चा समाप्त करेंगे A Further discussion on the Railway Budget will continue on 12th July, 2004.

The House stands adjourned till 1.30 P.M. tomorrow, the 8th July, 2004.

The House then adjourned at fifty-nine minutes past four of the clock till thirty minutes past one of the clock on Thursday, the 8th July, 2004.